ॐ श्री गणेशाय नमः

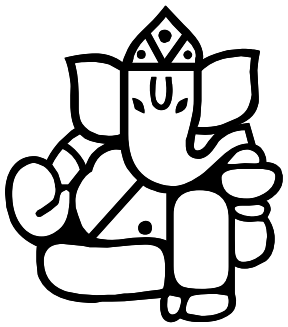

Horoscope of **Krishna**
Prepared using **Astro-Vision LifeSign** Software.
Licensee: Astro-Vision Futuretech Pvt.Ltd.

~~~~~~

जननी जन्म सौख्यानाँ
वर्धनी कुल सँपदाँ
पदवी पूर्व पुण्यानाँ
लिख्यते जन्म पत्रिका

~~~~~~

माता और संतान की भलाई के लिए
परिवार की संतोष वृद्धि के लिए
प्राचीन धार्मिक प्रक्रिया की अनुगम के लिए
यह जन्मकुण्डली लिखा गया है

Astro-Vision
YOUR TOMORROW

नाम : Krishna [पुरुष]
सप्ताह के दिन में। : गुरुवार

गुरुवार में जन्म लेने से आप दयालु और कृपालु होगें । आपको एक सुख पारिवारिक जीवन मिलेग । आप व्यवहारिक बुद्वि, तत्वज्ञान, और धार्मिकता को मिलकर जीवन जी लेते है ।

जन्म नक्षत्र : मघा

जन्म नक्षत्र मघा है। आपके जीवन में सामान्य प्रगति होती रहेगी। आप स्वस्थ और शान्त हैं। विज्ञान तथा तकनीकी किसी भी विषय में विज्ञ तथा सामाजिक कार्यों में कुशल होंगे। आप परंपरा पर विश्वास करनेवाले, सच्चे तथा भविष्य दृष्टा बनेंगे। आप दृढ़ एवं आदर्शवान होंगे। सच्चाई और शील आपके आभूषण हैं। आप दूसरों के लिए सब कुछ करने को तैयार रहेंगे। यह आश्चर्य की बात होगी कि आपके कई शत्रु भी हो सकते हैं। आप अपनी इच्छा के अनुसार सभी कार्य करने की शक्ति रखनेवाले हैं। इससे दूसरों की सहायता की बड़ी आवश्यकता नहीं होगी। आप अपने संबन्धियों तथा मित्रों से विशेष प्यार रखते हैं। आपके असाधारण योग्यता के कारण अधिकार शक्ति प्राप्त करेंगे। एक पिता के तौर पर सन्तानों के प्रश्नों का सामना करना पड़ेगा। हर समस्या के प्रति धीरज और स्वस्थता से निराकरण करने में समर्थ है। आप शालीनता और धार्मिक जागृति धारण करने वाले हैं। आप किसी पर उपकार करेंगे तो बदले में अपकार ही प्राप्त होगा। उच्च स्थान प्राप्त होने पर अपनी कार्यशक्ति के माध्यम से श्रेष्ठ तरीके से कार्य सुशोभित करने वाले हैं। आप सौन्दर्य और कला के उपासक हैं। आपका प्रगति दूसरों में ईर्ष्या जागृत करेगा। आपकी सभी इच्छायें फलित न हो पायेंगा। इसलिए दुःखी होना भी व्यर्थ होगा।

नेत्र या चर्मरोग से सतर्क रहना लाभप्रद होगा। अर्धांगिनी (पत्नी) पर हुकूमत करने की आदत पर अंकुश लगायें, तब ही घर में स्वर्ग सा सुख भोग पायेंगे। शरीर अधिक स्थूल न हो, इस बात को सदा याद रखें। घर-बाहर चोरी से होने वाली हानि से सावधान रहें। गुरुजनों का आशीर्वाद सदा प्राप्त होगा। मघा गंडमूल संज्ञक नक्षत्र है। अशुभ फलों से बचने के लिए इसकी शान्ति करने की परम्परा है।

तिथि : नवमि

नवमी तिथि में पैदा होने वालों की अपनी इच्छाओं की पूर्ति होती है। प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए अति पुरुषार्थ करने वाले हैं। धन और साधन कमाने में विशेष चतुरता प्रकट करने वाले हैं। समस्याओं का कुशलता पूर्वक समाधान करने में निपुण हैं। आप हर कार्य को बड़ी कुशलता से पूर्ण करते हैं। समाज में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त होगा। प्रतिस्पर्धी को पराजित करने में प्रवीणता प्राप्त है। सत्पुरुषों का विरोध और आचार हीन व्यक्तियों का साहचर्य पसंद होगा।

करण : वाध

बलवा करना में जन्म लेने के कारण आप एक स्वतंत्र चिन्तक होगें । आपके ऊपर नियंत्रण करना आप रोकते है । रिशतेदारों को आप ज्यादा महत्व नहीं देते ।

नित्ययोग : व्यागथा

आपका जन्म व्याघात नित्ययोग में हुआ हैं। आप जल्दी क्रोधित हो जाते हैं। इसलिए आपके साथी भी आपसे मिलने में संकुचित होते हैं। डर के मारे वे आपके भाव को पहले समझ लेते हैं। फिर आपसे मिलते हैं। ज़्यादा सोचे समझे बिना निर्णय करने का स्वभाव है। कभी कभी अपने निर्णयों को बदलने में देर भी नहीं लगती। समाज से मान्यता प्राप्त होगी। क्रूरता, दूसरे की निन्दा और हिंसक स्वभाव किसी दृष्टि से अच्छा नहीं माना जा सकता। दृष्टि दोष से बचें।

नाम	: Krishna Kumar
लिंग	: पुरुष
जन्म तिथि	: 14 मे, 1970 गुरुवार
जन्म समय (Hr.Min.Sec)	: 06.10.00 PM Standard Time
समय मेखल (Hrs.Mins)	: 05.30 ग्रीनवीच रेखा के पूर्व
जन्म स्थल	: Ernakulam
रेखांश : अक्षांश (Deg.Mins)	: 076.17 पूरब , 09.59 उत्तर दिशा
अयनांश	: चित्रपक्ष उ 23 डिग्रि. 26 मिनिट. 40 सेकेन्ड.
जन्म नक्षत्र - नक्षत्र पद	: **मघा** - 4
जन्म राशी - राशी का देव	: **सिंह** - रवि
लग्न - लग्न का देव	: तुला - शुक्र
तिथि	: नवमि, शुक्लपक्ष
सूर्योदय	: 06.04AM Standard Time
सूर्योस्त	: 06.38PM " "
दिनामान (Hrs. Mins)	: 12.34
दिनामान (Ghati. Vighati)	: 31.25
प्रादेशिक समय	: Standard Time - 25 Mins
ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जन्म तिथि	: गुरुवार
कलिदिना	: 1852255
दशा पद्धति	: विमशोत्तरी पद्धति, साल = 365.25 दिन
नक्षत्र का देव	: केतु
गणम्, योनी, जानवर	: असुर, पुरुष, चूहा
पक्षी , पेड	: , कमरकास
चन्द्र अवस्था	: 11 / 12
चन्द्र वेला	: 32 / 36
चन्द्र क्रिया	: 53 / 60
ठगड़ा राशी	: सिंह, वृशचिक
करण	: वाध
नित्ययोग	: व्यागथा
सूर्य का राशी - नक्षत्र का स्थान	: मेष - कृत्तिका
अनगदित्य का स्था	: पेट
Zodiac sign (Western System)	: Taurus
योगी पोयन्ट् - योगी नक्षत्र	: 254:57:03 - पूर्वषाढा
योगी गृह	: शुक्र
द्वगुणति योगी	: गुरु
अवयोगी नक्षत्र - गृह	: पूर्व भद्रपाढा - गुरु
आत्म करक - करकांसा	: रवि - धनु
अमत्य करक (मन / ज्ञानशक्ति)	: शुक्र
लग्न अरुढ़ा (पाठा) तनु	: धनु
धन अरुढ़ा	: वृशचिक

गृहों का रेखांश

गृहों का रेखांश पश्चमी पद्धती के प्रकार दिया गया है। जिसमें युरानस, नेपट्यून और प्लूटो भी शामील किया गया है।

पाश्चात्य पद्धति के अनुसार राशिचक्र में आप का चिह्न - वृषभ

गृह	रेखांश डि : मि :से	गृह	रेखांश डि : मि :से
लग्न	227:29:37	गुरु	208:19:39 रितु
चन्द्र	155:11:37	शनि	43:37:24
सूर्य	53:18:45	युरानस	185:00:20 रितु
बुध	45:18:04रितु	निपट्यून	239:41:21 रितु
शुक्र	80:16:57	प्लूटो	174:47:58 रितु
कुज	77:30:19	नोड	338:12:51

गृहों का निरायन रेखांश भारतीय ज्योतिष शास्त्र के आधार पर किया गया है। यह ऊपर बताई गई 'शयन मूल्यों' के आधार पर की गई है।

गृहों का निरायन रेखांश

गृहों के निरायन रेखांश पर भारत के ज्यातिष शास्त्र की नीव डाली गई है। यह शयन रेखांश के मूल्य से (गुणांक से) अयनांश मूल्य को कम करने से प्राप्त होता है।

अयनांश की गणना अलग - अलग पद्धती से की जाती है। उनके प्रकार और आधार नीचे बताये गये है:
चित्रपक्ष उ 23 डिग्रि. 26 मिनिट. 40 सेकेन्ड.

गृह	रेखांश डि : मि :से	राशी	राशी के रेखांश प्रकार डि : मि :से	नक्षत्र	पद
लग्न	204:02:57	तुला	24:02:57	विशखा	2
चन्द्र	131:44:57	सिंह	11:44:57	मघा	4
रवि	29:52:05	मेष	29:52:05	कृत्तिका	1
बुध	21:51:23	मेष	21:51:23रितु	भरणी	3
शुक्र	56:50:17	वृष	26:50:17	मृगशिरा	2
मंगल	54:03:38	वृष	24:03:38	मृगशिरा	1
गुरु	184:52:59	तुला	4:52:59रितु	चित्रा	4
शनि	20:10:43	मेष	20:10:43	भरणी	3
राहु	314:46:10	कुंम्भ	14:46:10	शताभिषा	3
केतु	134:46:10	सिंह	14:46:10	पूर्व फालगुनी	1
गुलिक	87:58:52	मिथुन	27:58:52	पुर्नवासु	3

नक्षत्र का स्वामी / उप स्वामी / उप उप स्वामी

गृह	नक्षत्र	नक्षत्र का देव	उप स्वामी	उप उप स्वामी
लग्न	विशखा	गुरु	बुध	बुध
चन्द्र	मघा	केतु	बुध	केतु
रवि	कृत्तिका	रवि	राहु	शनि
बुध	भरणी	शुक्र	गुरु	राहु
शुक्र	मृगशिरा	मंगल	गुरु	बुध
मंगल	मृगशिरा	मंगल	मंगल	चन्द्र
गुरु	चित्रा	मंगल	शुक्र	केतु
शनि	भरणी	शुक्र	गुरु	गुरु
राहु	शताभिषा	राहु	केतु	राहु
केतु	पूर्व फालगुनी	शुक्र	शुक्र	शनि
गुलिक	पुर्नवासु	गुरु	शुक्र	गुरु

निरायन संक्षिप्त (डिग्रि. मिनिट. सेकेन्ड.)

गृह	राशी	रेखांश	नक्षत्र/पद	गृह	राशी	रेखांश	नक्षत्र/पद
लग्न	तुला	24:02:57	विशखा / 2	गुरु	तुला	4:52:59R	चित्रा / 4
चन्द्र	सिंह	11:44:57	मघा / 4	शनि	मेष	20:10:43	भरणी / 3
रवि	मेष	29:52:05	कृत्तिका / 1	राहु	कुंम्भ	14:46:10	शताभिषा / 3
बुध	मेष	21:51:23R	भरणी / 3	केतु	सिंह	14:46:10	पूर्व फालगुनी / 1
शुक्र	वृष	26:50:17	मृगशिरा / 2	गुलिक	मिथुन	27:58:52	पुर्नवासु / 3
मंगल	वृष	24:03:38	मृगशिरा / 1				

राशी

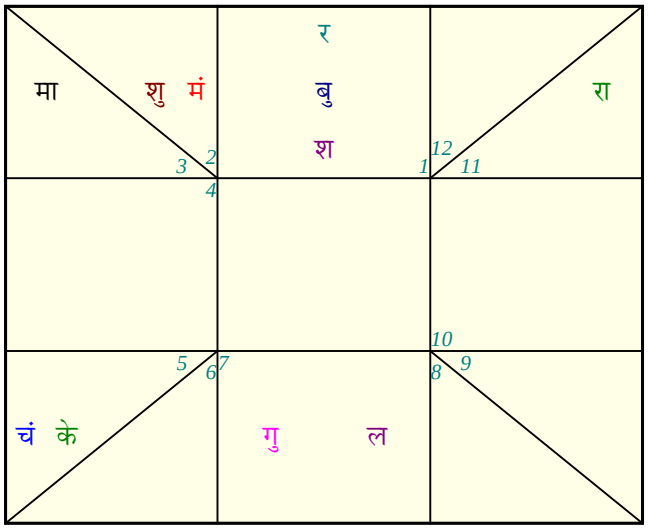

नवांश

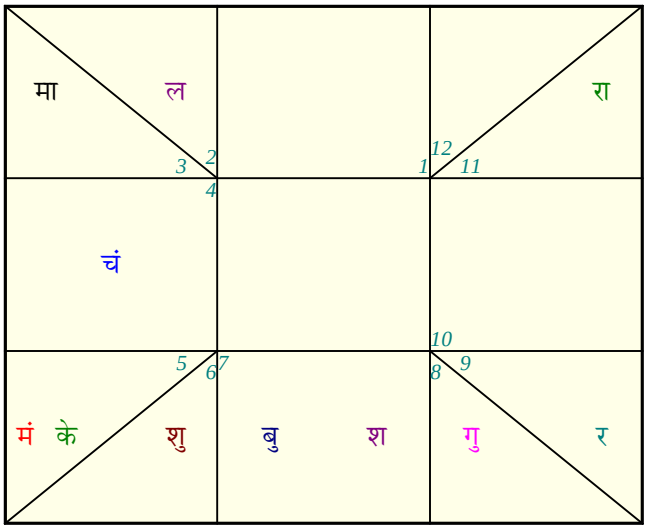

जन्म के समय दशा की समतुलना = केतु 0 साल, 9 महीने, 30 दिन

विशिष्ट राशी चक्र

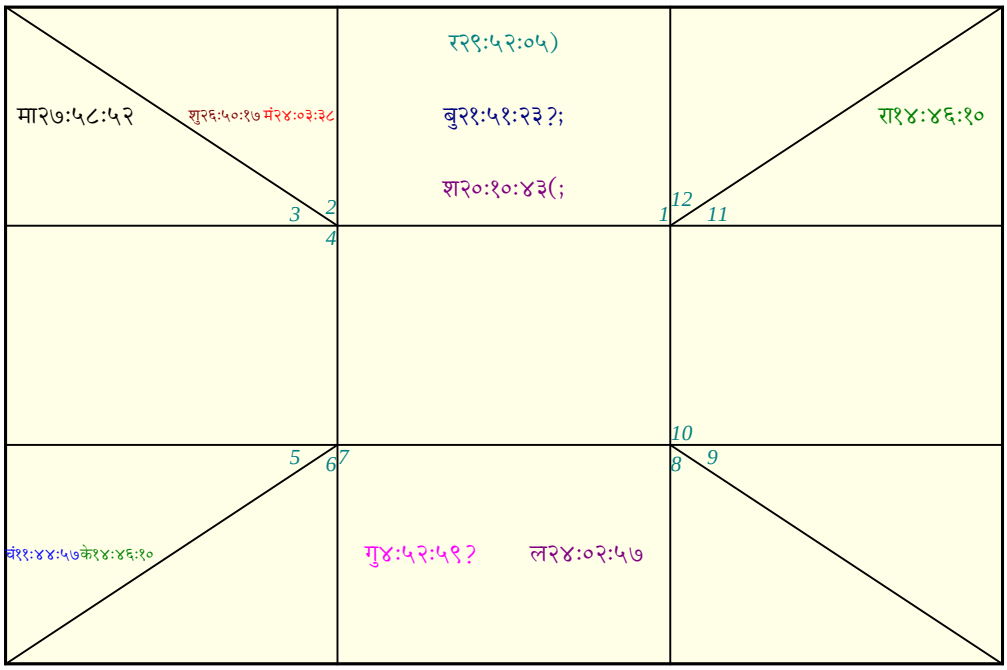

? विपरीत परिस्थिती **)** श्रेष्ट समय **(** क्षीण परिस्थिती **;** सयहोग

नवांश: चं::कर्क र::धनु बु::तुला शु::कन्या मं::सिंह
गु::वृशचिक श::तुला रा::कुंम्भ के::सिंह ल::वृष मा::मिथुन

जन्म के समय दशा की समतुलना = केतु 0 साल, 9 महीने, 30 दिन

भाव कुंडली

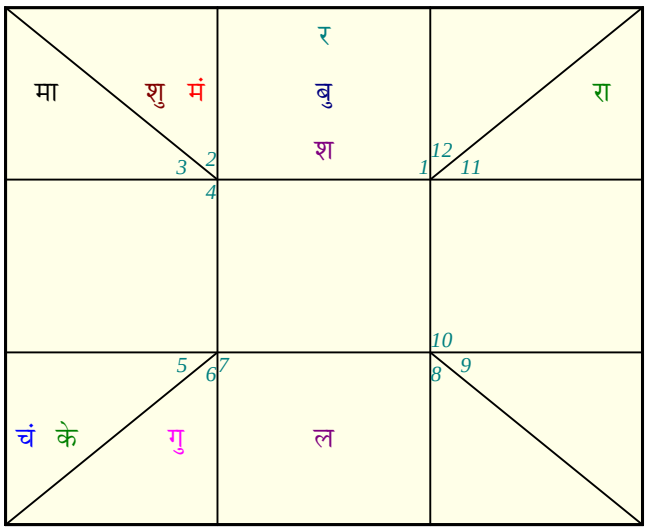

भाव टेबुल

भाव	आरंभ डि : मि :से	मध्य डि : मि :से	अन्तिम डि : मि :से	गृहों भाव में उपस्थित है
1	188:44:38	204:02:57	218:44:38	
2	218:44:38	233:26:19	248:08:01	
3	248:08:01	262:49:42	277:31:23	
4	277:31:23	292:13:04	307:31:23	
5	307:31:23	322:49:42	338:08:01	रा
6	338:08:01	353:26:19	8:44:38	
7	8:44:38	24:02:57	38:44:38	र बु श
8	38:44:38	53:26:19	68:08:01	शु मं
9	68:08:01	82:49:42	97:31:23	मा
10	97:31:23	112:13:04	127:31:23	
11	127:31:23	142:49:42	158:08:01	चं के
12	158:08:01	173:26:19	188:44:38	गु

सुदर्शन चक्र

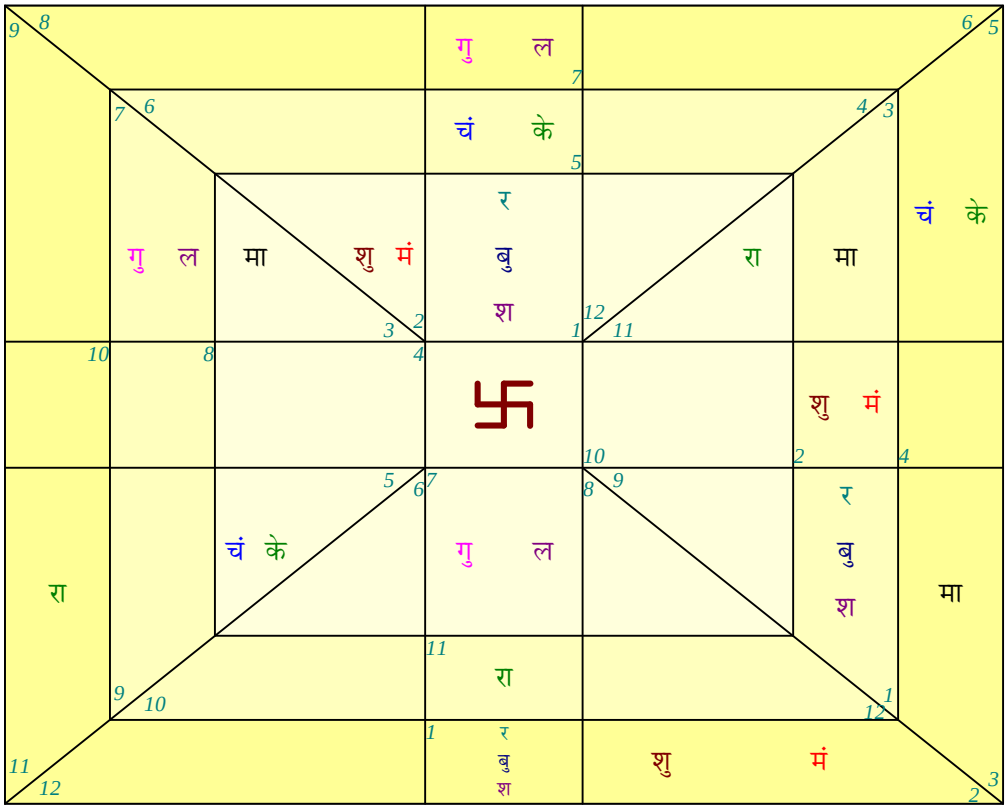

उपग्रह

हर गृह की अपेक्षा उपगृह की भी गुणना की जाती है। चन्द्र, शुक्र, मंगल, राहु और केतु के उपगृह की गुणना सूर्य के रेखांश के आधार की जाती है। यह इस प्रकार है।

धुमीदी संग के उपग्रह

गृह	उपग्रह	गुणने की प्रक्रीया या पध्धती
कुज	धुमा	सूर्य का रेखांश + 133 डिग्रि. 20 मिनिट.
राहू	व्यातीपटा	360 - धुमा
चन्द्र	परिवेश	180 + व्यातीपटा
शुक्र	इन्द्रचाप	360 - परिवेश
केतू	उपकेतु	इन्द्रचाप + 16 डिग्रि. 40 मिनिट.

सूर्य, बुध, गुरु, शनी के उपगृहों का तथा अन्य मंगल के उपग्रहों के गुणन का आधार रात और दिन के आठ समान काल में बाँटे गये विभाजन पर आधारीत रहा है।

प्रारंभ विभाग दिन के स्वामित्व के लिये रखा गया है जब की शेष भाग हप्ते के दिल के स्वामित्व के लिये उपयोग में लिया गया है। आठ विभाजन के अधिपती नहि रहे हैं।जन्म रात को हुवा हो तो आठ समभाग से सात विभाजीत भागों को गृहों का स्वामी स्थान दिया गया है। यह सप्ताह के पाँचवे दिनसे गिना जाता है।

रेखांश की गिनती केलिये दो अलग-अलग पध्धतियों का आविश्कार किया गया है।प्रथम पध्धति के अनुसार, प्रारंभ समय काल (गृहों के स्वामी) गृहाधीपती के अधिन रहता है। दूसरी पध्धति के अनुसार काल के अंतिम चरण गृहाधीपती के आधिन रहता है।

जब गुलीक के हिसाव से देखों तो शनी के उपग्रह से एक तीसरी पध्धती का भी अनुसंधान किया गया जिससे रेखांश की गिनती की जाती है। यह नीचे दिये गये स्थाई उदयकाल पर निर्भर है।इस प्रकार गुणनफल जो भी प्राप्त हुआ है इसे 'एस्ट्रो विज़न' के पध्धती के अनुसार 'मांदी' कहा जाता है। जन्मपत्रिका मे मुख्य गृह और राशी चक्र के साथ दिया गया है।

दिन	दिन के समय जन्म	रात के वक्त जन्म
रविवार	26 गटि (घंटा)	10 गटि (घंटा)
सोमवार	22	6
मंगलवार	18	2
वुधवार	14	26
गुरुवार	10	22
शुक्रवार	6	18
शनिवार	2	14

गुलिकादी का समूह।

स्वीकार्य पध्धती : लग्न के प्रारंभकाल

गृह	उपग्रह	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय
सूर्य	काल	10:46:45	12:20:59
बुध	अर्धप्रहर	15:29:30	17:03:45
कुज	मृत्यु	13:55:14	15:29:30
गुरु	यमकन्ठका	06:04:00	07:38:15
शनि	गुलिक	09:12:29	10:46:45

रेखांश उपगृह

उपग्रह	रेखांश डि : मि :से	राशी	राशी के रेखांश प्रकार डि : मि :से	नक्षत्र	पद
काल	95:12:02	कर्क	5:12:02	पुष्य	1
अर्धप्रहर	164:32:18	कन्या	14:32:18	हस्त	2
मृत्यु	140:40:13	सिंह	20:40:13	पूर्व फालगुनी	3
यमकंठक	28:25:38	मेष	28:25:38	कृत्तिका	1
गुलिक	73:38:40	मिथुन	13:38:40	आर्द्र	3
परिवेष	16:47:54	मेष	16:47:54	भरणी	2
इंद्रचाप	343:12:05	मीन	13:12:05	उत्तर भद्रपाढा	3
व्यथिपात	196:47:54	तुला	16:47:54	स्वाति	4
उपकेतु	359:52:05	मीन	29:52:05	रेवत्ति	4
धूम	163:12:05	कन्या	13:12:05	हस्त	1

नक्षत्राधीपती / नक्षत्राधी सहपती / नक्षत्राधी अनुसहपती तथां उपग्रहों की नामावली।

गृह	नक्षत्र	नक्षत्र का देव	उप स्वामी	उप उप स्वामी
काल	पुष्य	शनि	शनि	गुरु
अर्धप्रहर	हस्त	चन्द्र	गुरु	बुध
मृत्यु	पूर्व फालगुनी	शुक्र	गुरु	बुध
यमकंठक	कृत्तिका	रवि	चन्द्र	रवि
गुलिक	आर्द्र	राहु	बुध	राहु
परिवेष	भरणी	शुक्र	चन्द्र	शनि
इंद्रचाप	उत्तर भद्रपाढा	शनि	राहु	गुरु
व्यथिपात	स्वाति	राहु	शुक्र	शनि
उपकेतु	रेवत्ति	बुध	शनि	गुरु
धूम	हस्त	चन्द्र	राहु	शुक्र

उपग्रह राशी

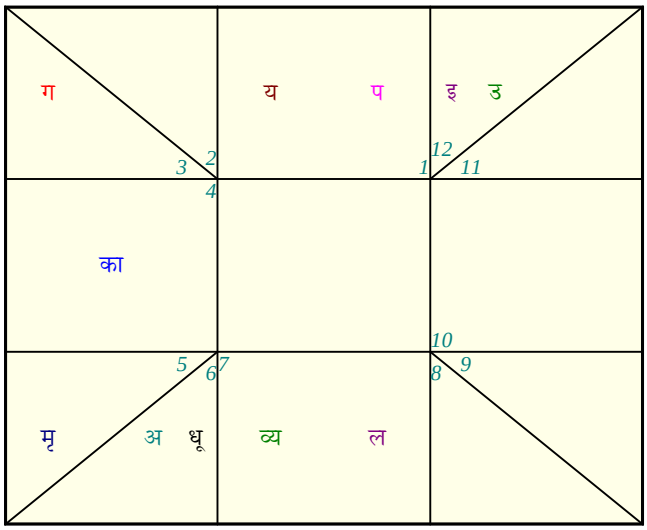

का	उ	काल	अ	उ	अर्धप्रहर
मृ	उ	मृत्यु	य	उ	यमकंठक
ग	उ	गुलिक	प	उ	परिवेष
इ	उ	इंद्रचाप	व्य	उ	व्यथिपात
उ	उ	उपकेतु	धू	उ	धूम

कराकास (जयमिनी सिस्टेम्म)

कारक		गृह	
१	आत्म करक	रवि	करकांसा : धनु
२	अमत्य करक (मन / ज्ञानशक्ति)	शुक्र	
३	भ्रात्रि (बाई / बहन)	मंगल	
४	मात्रि (माता)	बुध	
५	पुत्र (बच्चे)	शनि	
६	ज्ञाति (रिशतेदार)	चन्द्र	
७	दारा (पति या पत्नी)	गुरु	

अरुढ़ /पाढ़ा

कोड	अरुढ़/पाढ़ा	राशी
P 1	लग्न अरुढ़ा (पाठा) तनु	धनु
P 2	धन अरुढ़ा	वृशचिक
P 3	विक्रम /मात्रु पाढ़ा	सिंह
P 4	मात्रु/सुख पाढ़ा	कर्क
P 5	मंत्र/पुत्र पाढ़ा	मिथुन
P 6	रोग/सात्रु पाढ़ा	वृष
P 7	धर/कलत्रा/स्त्री पाढ़ा	मिथुन
P 8	मृत्यु/मरण/आयु पाढ़ा	वृष
P 9	पित्रु/भाग्य/धर्म पाढ़ा	कुंम्भ
P 10	कर्म/राज्य पाढ़ा	कन्या
P 11	लाभ/आय पाढ़ा	धनु
P 12	व्याय/उपा पाढ़ा	वृशचिक

अरुढ़ चक्र

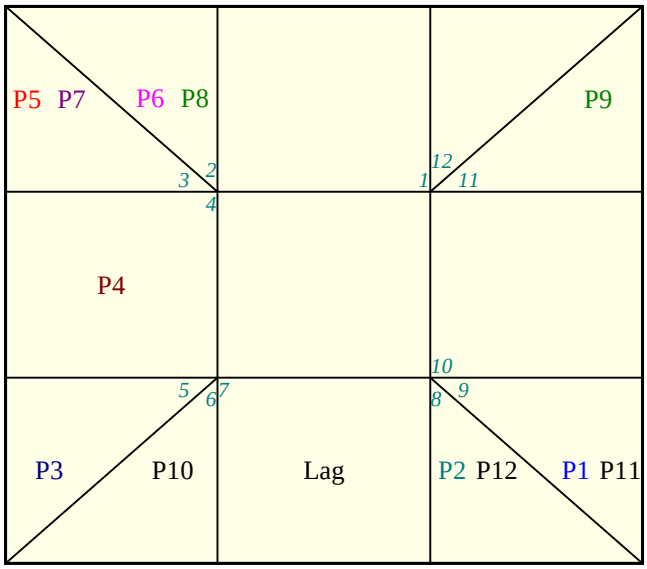

षोढसवर्गा टेबुल

	ल	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	रा	के	मा
राशी	7	5	1	1	2 :	2 :	7	1	11	5	3
औरा	4 :	5	4 :	4 :	5	5	5	4 :	5	5	4 :
द्रिख्खन	3	9	9	9	10	10	7	9	3	9	11
चतूथांश	4 :	8 :	10	7	11	11	7	7	2 :	8 :	12 :
सप्तांश	12	7	7	6 :	2 :	1	8 :	5	2 :	8 :	9
नवांश	2 :	4 :	9	7	6 :	5	8 :	7	11	5	3
दशांश	3	8 :	10	8 :	6 :	6 :	8 :	7	3	9	12 :
व्दादशांश	4 :	9	12	9	12	11	8 :	9	4 :	10	2 :
सोडांश	1	11	4 :	12	7	5	3	11	12	12	11
विंशाम्स	5	4 :	8 :	3	2 :	1	4 :	2 :	6 :	6 :	11
चतुर्विंशाम्स	12	2 :	4 :	10	1	11	8 :	9	4 :	4 :	3
भम्श	4 :	11	3	8 :	4 :	1	11	7	8 :	2 :	8 :
त्रिंशाम्स	3	9	7	3	8 :	10	1	3	9	9	7
खवेदांश	9	4 :	4 :	6 :	6 :	3	7	3	8 :	8 :	2 :
	1	10	9	9	9	5	8 :	7	3	3	2 :
शष्टियांश	7	4 :	12	8 :	7	2 :	4 :	5	4 :	10	10 :
ओजराशी गणन	9	8	7	8	6	11	8	14	7	7	8

1-मेष 2-वृष 3-मिथुन 4-कर्क 5-सिंह 6-कन्या
7-तुला 8-वृशचिक 9-धनु 10-मकर 11-कुंम्भ 12-मीन

वर्गोत्तम

राहु, केतु, गुलिक वर्गोतम में है ।

षोढसवर्गा अधिपति

	ल	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	रा	के	मा
राशी	शु	+र	+मं	=मं	^शु	=शु	~शु	~मं	+श	+र	बु
औरा	चं	+र	+चं	~चं	~र	+र	+र	~चं	~र	+र	चं
द्रिख्खन	बु	=गु	+गु	=गु	+श	=श	~शु	=गु	+बु	+गु	श
चतूथांश	चं	=मं	~श	+शु	+श	=श	~शु	+शु	+शु	+मं	गु
सप्तांश	गु	=शु	~शु	^बु	^शु	^मं	+मं	~र	+शु	+मं	गु
नवांश	शु	^चं	+गु	+शु	+बु	+र	+मं	+शु	+श	+र	बु
दशांश	बु	=मं	~श	=मं	+बु	~बु	+मं	+शु	+बु	+गु	गु
व्दादशांश	चं	=गु	+गु	=गु	=गु	=श	+मं	=गु	=चं	~श	शु
सोडांश	मं	=श	+चं	=गु	^शु	+र	~बु	^श	~गु	+गु	श
विंशाम्स	र	^चं	+मं	^बु	^शु	^मं	+चं	+शु	+बु	~बु	श
चतुर्विंशाम्स	गु	=शु	+चं	=श	=मं	=श	+मं	=गु	=चं	=चं	बु
भम्श	चं	=श	=बु	=मं	~चं	^मं	=श	+शु	=मं	=शु	मं
त्रिंशाम्स	बु	=गु	~शु	^बु	=मं	=श	+मं	+बु	~गु	+गु	शु
खवेदांश	गु	^चं	+चं	^बु	+बु	~बु	~शु	+बु	=मं	+मं	शु
	मं	=श	+गु	=गु	=गु	+र	+मं	+शु	+बु	~बु	शु
शष्टियांश	शु	^चं	+गु	=मं	^शु	=शु	+चं	~र	=चं	~श	श

^ अपना वर्ग + मित्र = निश्पक्षीय ~ शत्रु

वर्गा भेढ

स्वावर्ग और उच्च वर्ग के लिए पोयन्ट् दिया जाता है ।

गृहों	षढ़वर्ग	सप्तवर्गा	दाशवर्ग	षोढ़सवर्ग
चन्द्र	1- ---	1- ---	2-पारिजातांस	5-कणठुकाम्स
रवि	1- ---	1- ---	1- ---	1- ---
बुध	1- ---	2-किम्सुकम्स	2-पारिजातांस	4-नागपुष्पाम्स
शुक्र	2-किम्सुकम्स	3-व्यजनांमस	5-सिंहासनाम्स	6-कीरलाम्स
मंगल	2-किम्सुकम्स	3-व्यजनांमस	3-उत्तमामस	5-कणठुकाम्स
गुरु	0-	0-	1- ---	2-बीढ़काम्स
शनि	1- ---	1- ---	3-उत्तमामस	6-कीरलाम्स

राशी[D1]

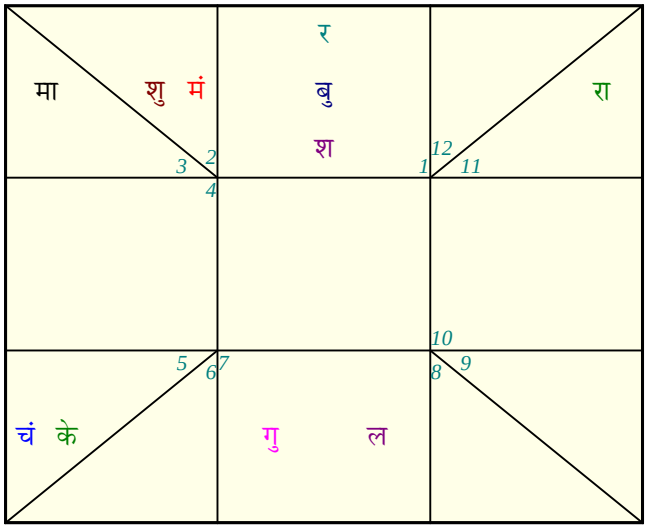

औरा[D2]

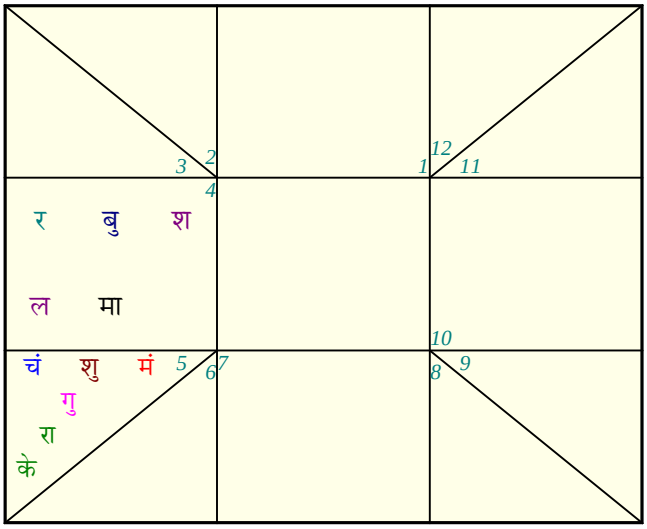

द्रिख्खन[D3]

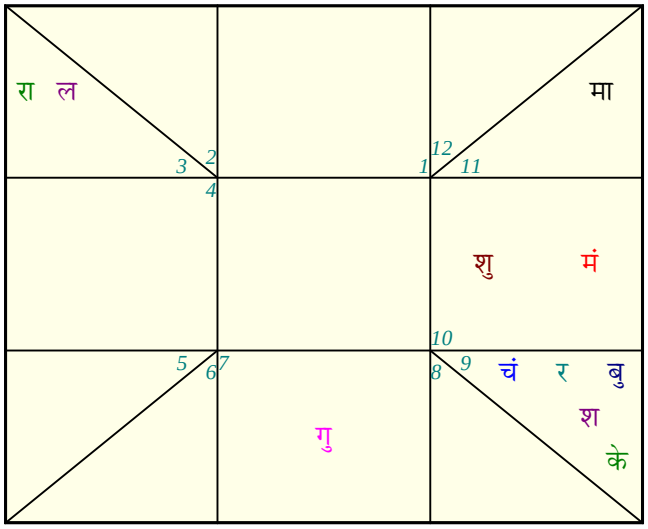

चतूथांश[D4]

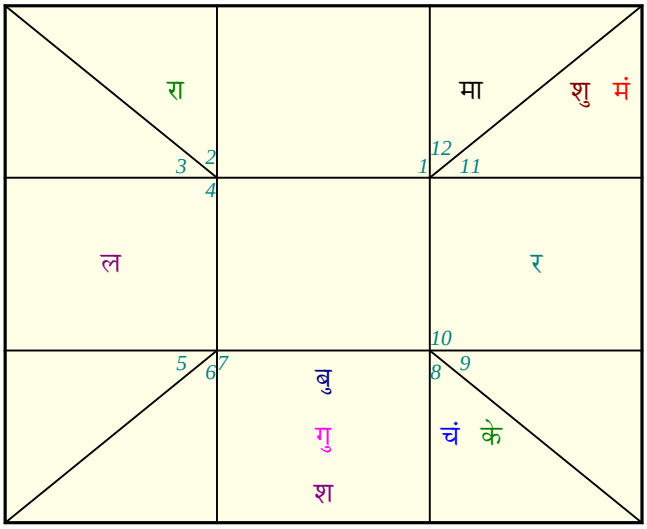

सप्तांश[D7]

नवांश[D9]

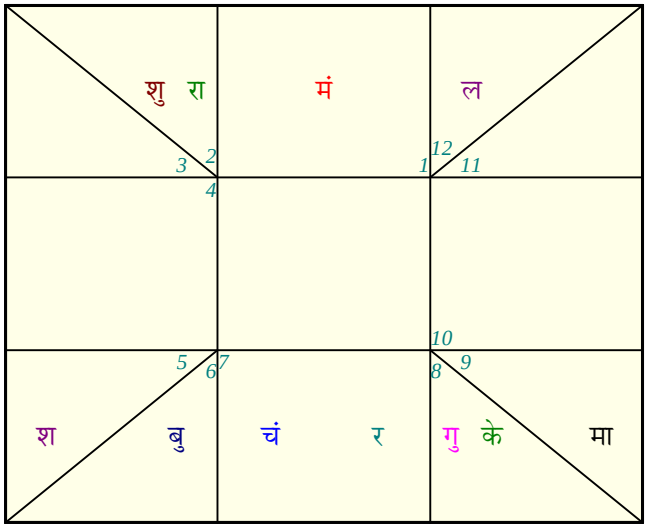

दशांश[D10]

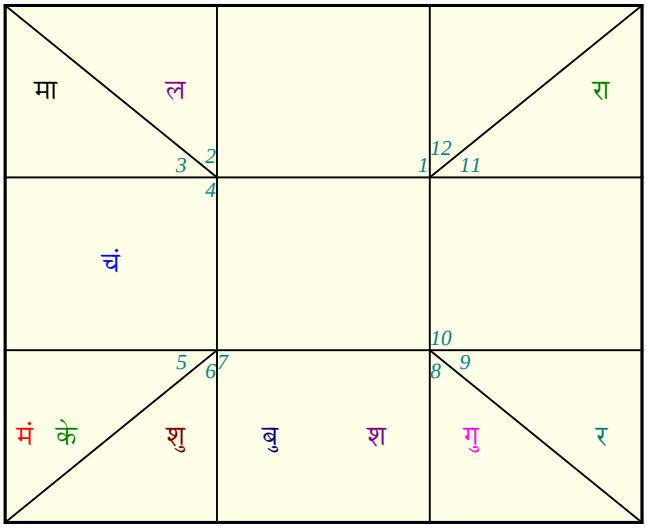

व्दादशांश[D12]

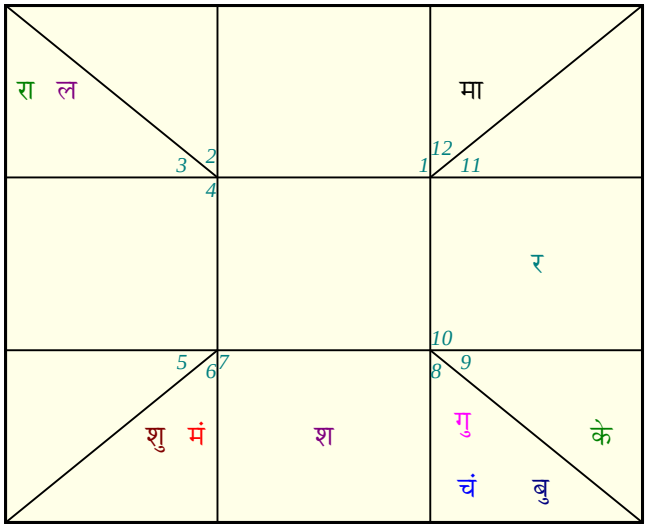

सोडांश[D16]

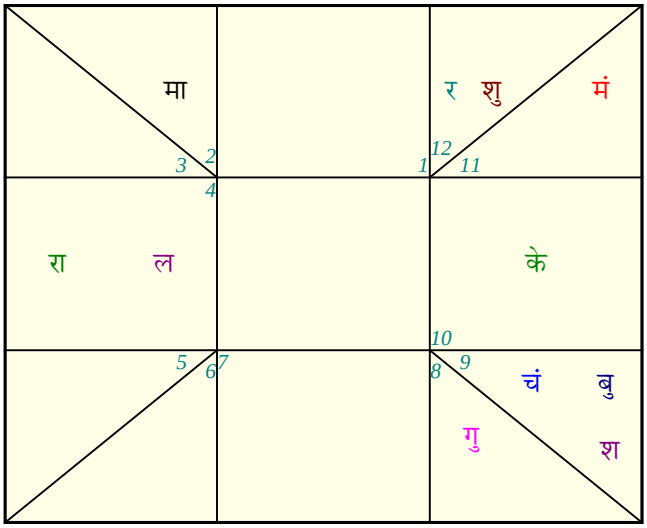

विंशाम्स[D20]

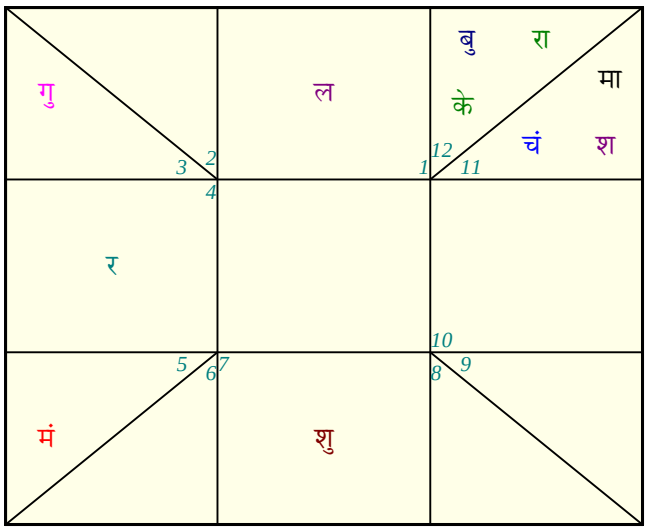

चतुर्विंशाम्स[D24]

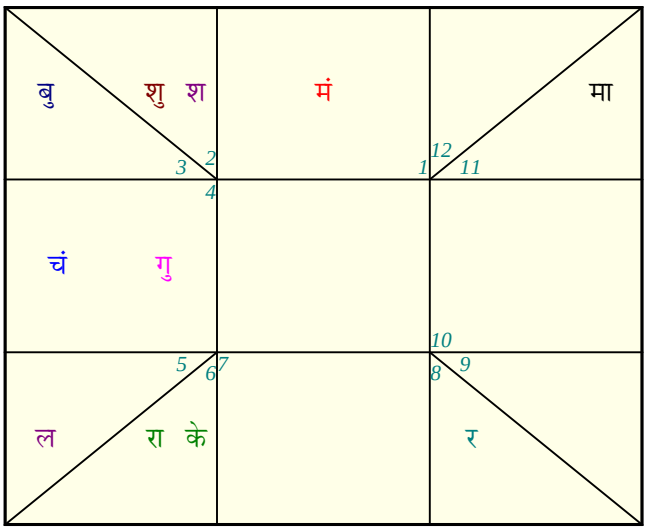

भम्श[D27]

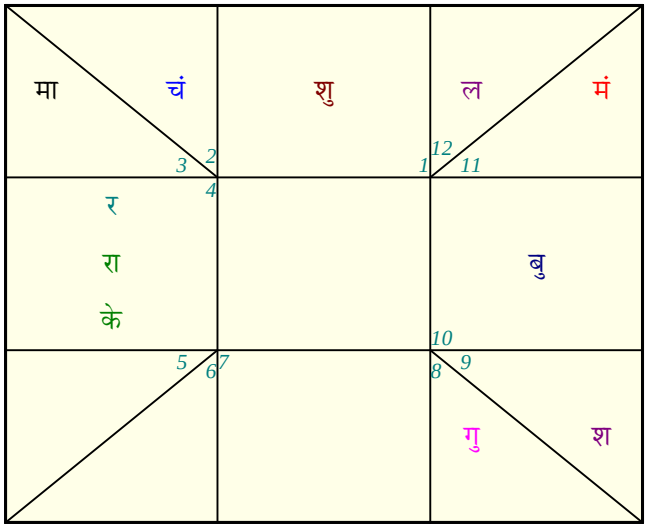

त्रिंशाम्स[D30]

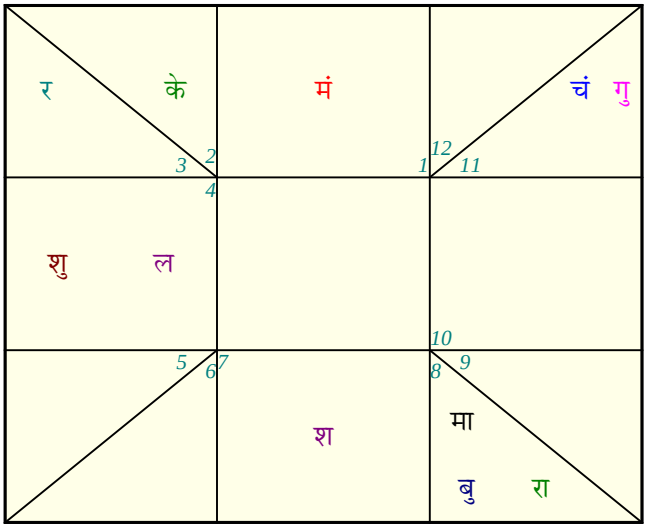

खवेदांश[D40]

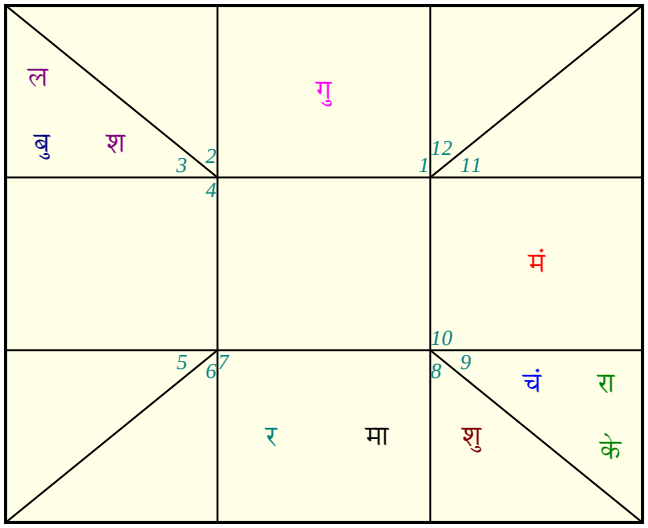

[D45]

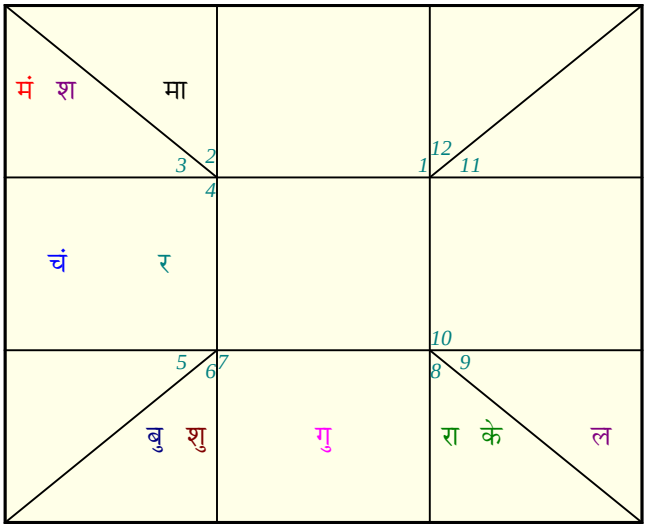

शष्टियांश[D60]

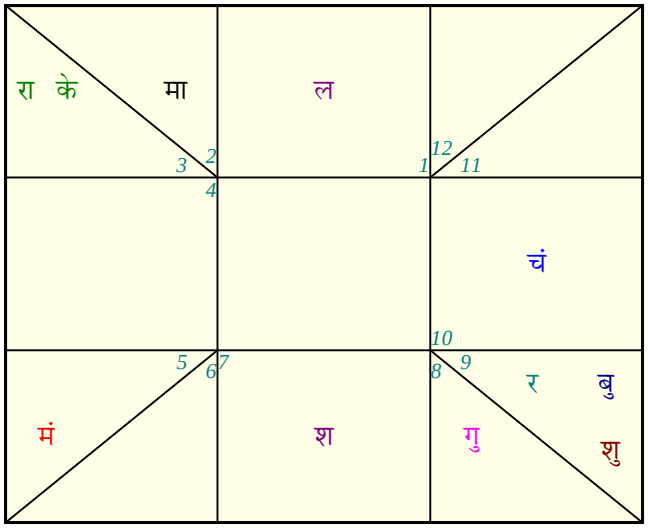

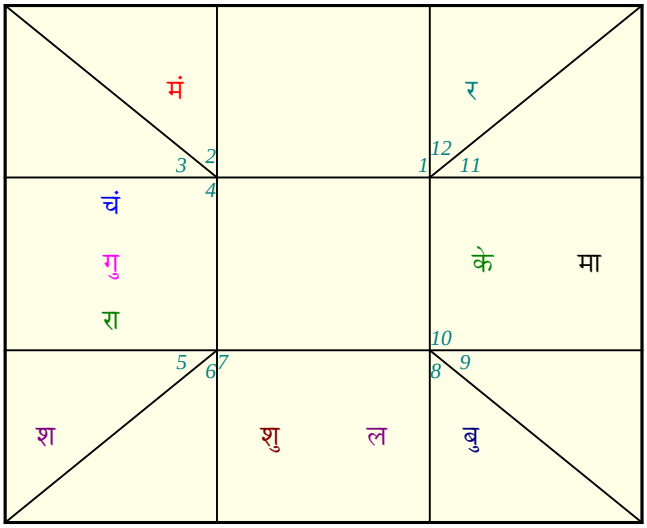

प्रस्तारा अष्ठगवर्ग - चन्द्र

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	सभी मिलाकार
मेष			1			1			2
वृष	1					1			2
मिथुन	1	1	1		1		1		5
कर्क			1	1	1	1		1	5
सिंह	1		1	1		1	1	1	6
कन्या		1		1	1	1	1		5
तुला	1	1	1		1	1			5
वृशचिक		1	1	1					3
धनु								1	1
मकर	1	1	1	1	1	1			6
कुंम्भ	1	1	1	1	1		1		6
मीन				1	1			1	3
सभी मिलाकार	6	6	8	7	7	7	4	4	49

प्रस्तारा अष्ठगवर्ग - रवि

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	सभी मिलाकार
मेष		1		1			1		3
वृष	1	1			1		1		4
मिथुन	1		1		1	1			4
कर्क		1					1	1	3
सिंह			1		1	1		1	4
कन्या			1					1	2
तुला	1	1		1			1		4
वृशचिक		1		1	1		1		4
धनु		1	1		1		1	1	5
मकर	1	1	1		1		1	1	6
कुंम्भ		1	1		1	1	1		5
मीन			1		1	1		1	4
सभी मिलाकार	4	8	7	3	8	4	8	6	48

प्रस्तारा अष्ठगवर्ग - बुध

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	सभी मिलाकार
मेष			1				1		2
वृष	1			1	1	1	1	1	6
मिथुन	1		1	1	1				4
कर्क				1			1	1	3
सिंह		1	1	1	1	1		1	6
कन्या	1	1	1	1		1			5
तुला							1	1	2
वृशचिक	1				1		1	1	4
धनु		1	1	1	1		1		5
मकर	1		1	1	1		1	1	6
कुंम्भ		1	1		1		1		4
मीन	1	1	1	1	1	1		1	7
सभी मिलाकार	6	5	8	8	8	4	8	7	54

प्रस्तारा अष्ठगवर्ग - शुक्र

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	सभी मिलाकार
मेष	1				1				2
वृष				1		1		1	3
मिथुन	1		1	1		1	1	1	6
कर्क	1			1	1	1	1		5
सिंह	1		1	1		1	1	1	6
कन्या	1		1	1	1				4
तुला	1				1			1	3
वृशचिक	1	1					1	1	4
धनु	1		1	1			1	1	5
मकर				1	1		1	1	4
कुंम्भ		1	1	1		1	1	1	6
मीन	1	1		1	1				4
सभी मिलाकार	9	3	5	9	6	5	7	8	52

प्रस्तारा अष्ठगवर्ग - मंगल

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	सभी मिलाकार
मेष				1			1		2
वृष					1				1
मिथुन	1	1	1		1				4
कर्क						1	1	1	3
सिंह		1	1		1	1		1	5
कन्या		1	1			1			3
तुला	1			1			1	1	4
वृशचिक					1		1		2
धनु				1	1		1	1	4
मकर	1	1					1		3
कुंम्भ		1	1		1		1		4
मीन				1	1	1		1	4
सभी मिलाकार	3	5	4	4	7	4	7	5	39

प्रस्तारा अष्ठगवर्ग - गुरु

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	सभी मिलाकार
मेष	1	1	1			1		1	5
वृष		1	1		1	1			4
मिथुन	1	1		1	1		1	1	6
कर्क		1	1			1		1	4
सिंह			1		1	1	1	1	5
कन्या	1		1	1			1		4
तुला		1		1		1		1	4
वृशचिक		1			1	1		1	4
धनु	1	1	1		1	1			5
मकर		1	1	1		1		1	5
कुंम्भ	1	1	1	1	1			1	6
मीन				1	1		1	1	4
सभी मिलाकार	5	9	8	6	7	8	4	9	56

प्रस्तारा अष्ठगवर्ग - शनि

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	सभी मिलाकार
मेष		1		1	1				3
वृष		1							1
मिथुन	1						1		2
कर्क		1			1			1	3
सिंह						1	1	1	3
कन्या			1		1	1	1		4
तुला	1	1		1	1			1	5
वृशचिक		1	1						2
धनु			1					1	2
मकर	1	1	1					1	4
कुंम्भ		1	1		1	1	1		5
मीन			1	1	1	1		1	5
सभी मिलाकार	3	7	6	3	6	4	4	6	39

अष्टकवर्ग

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	सभी मिलाकार
मेष	2	3	2	2	2	5	3	19
वृष	2	4	6	3	1	4	1	21
मिथुन	5	4	4	6	4	6	2	31
कर्क	5	3	3	5	3	4	3	26
सिंह	6	4	6	6	5	5	3	35
कन्या	5	2	5	4	3	4	4	27
तुला	5	4	2	3	4	4	5	27
वृशचिक	3	4	4	4	2	4	2	23
धनु	1	5	5	5	4	5	2	27
मकर	6	6	6	4	3	5	4	34
कुंम्भ	6	5	4	6	4	6	5	36
मीन	3	4	7	4	4	4	5	31
	49	48	54	52	39	56	39	337

अष्टकवर्ग कुंडलियाँ

चन्द्र अष्टकवर्ग 49

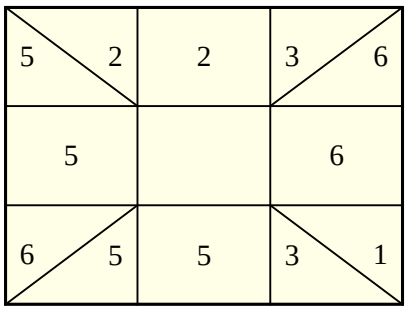

रवि अष्टकवर्ग 48

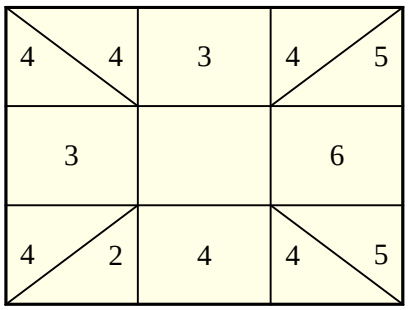

बुध अष्टकवर्ग 54

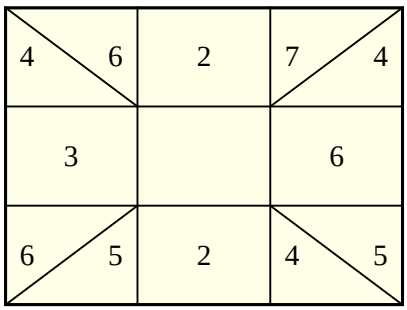

शुक्र अष्टकवर्ग 52

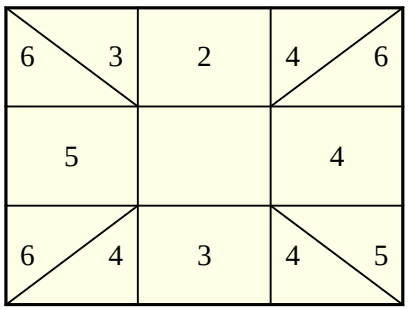

मंगल अष्टकवर्ग 39

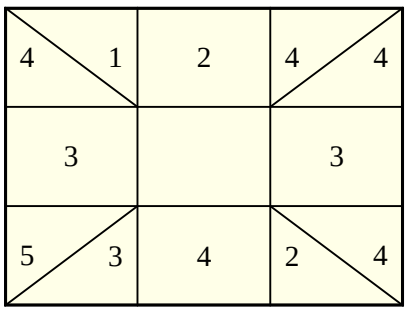

गुरु अष्टकवर्ग 56

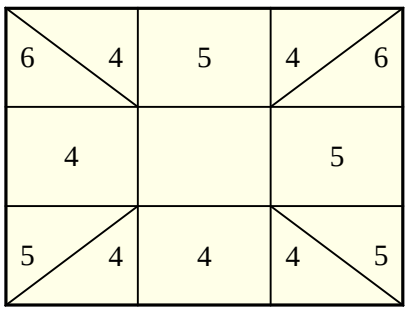

शनि अष्टकवर्ग 39

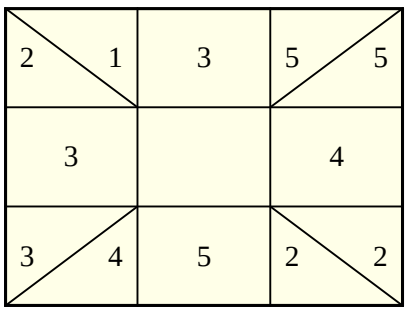

सर्व अष्टकवर्ग 337

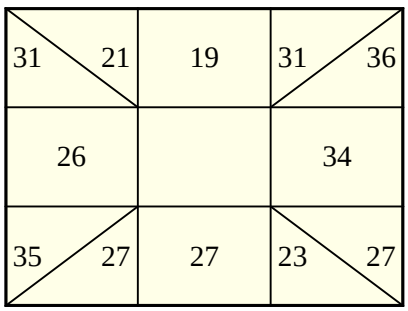

अष्टकवर्ग - त्रिकोण कम होना

चन्द्र अष्टकवर्ग 16

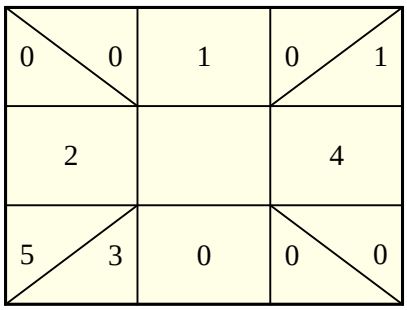

रवि अष्टकवर्ग 12

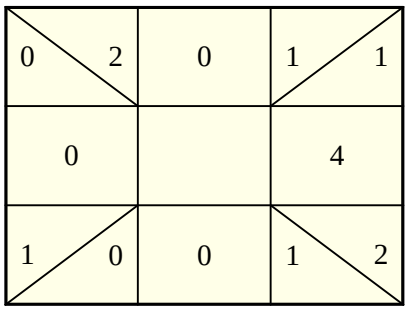

बुध अष्टकवर्ग 18

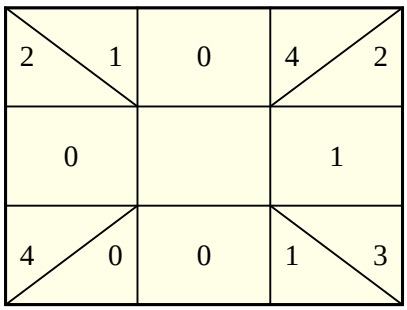

शुक्र अष्टकवर्ग 16

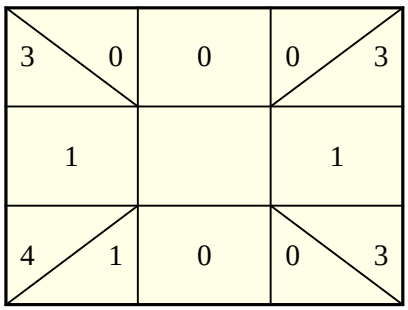

मंगल अष्टकवर्ग 12

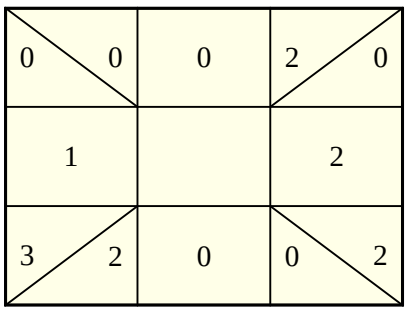

गुरु अष्टकवर्ग 5

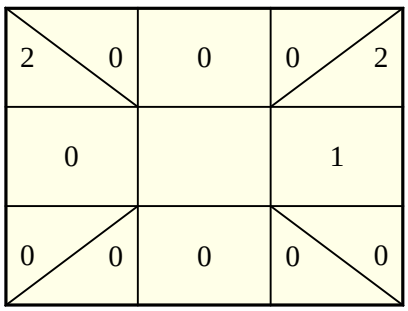

शनि अष्टकवर्ग 18

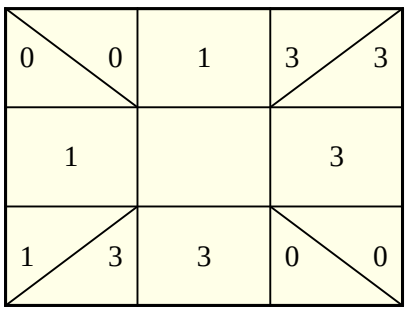

सर्व अष्टकवर्ग 97

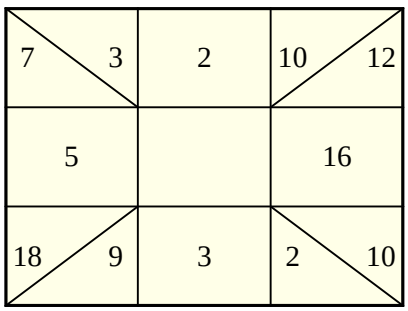

अष्टकवर्ग - एकाधिपती कम होना

चन्द्र अष्टकवर्ग 13

0 0	1	0 1
2		1
5 3	0	0 0

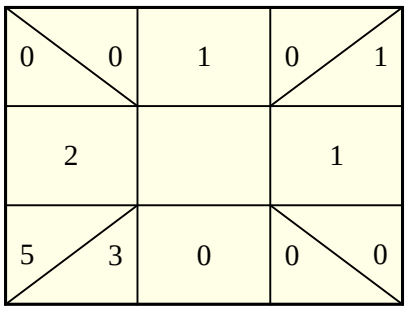

रवि अष्टकवर्ग 8

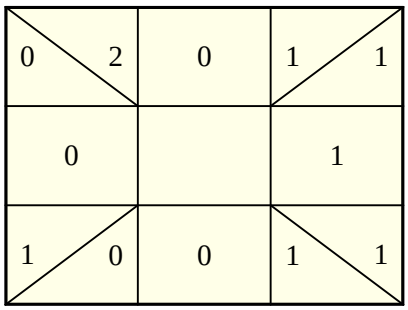

0 2	0	1 1
0		1
1 0	0	1 1

बुध अष्टकवर्ग 16

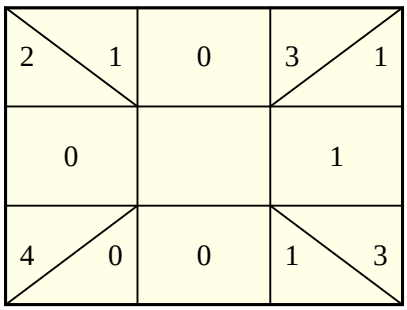

2 1	0	3 1
0		1
4 0	0	1 3

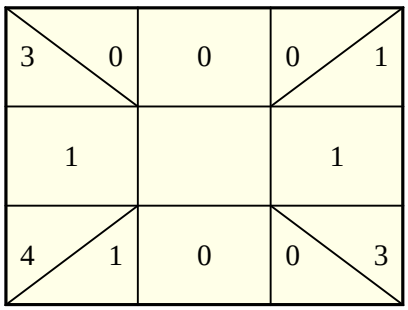

शुक्र अष्टकवर्ग 14

3 0	0	0 1
1		1
4 1	0	0 3

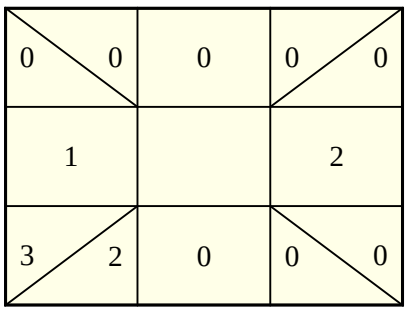

मंगल अष्टकवर्ग 8

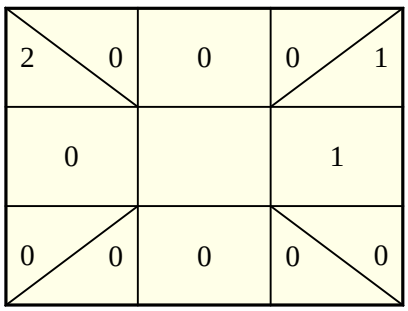

0 0	0	0 0
1		2
3 2	0	0 0

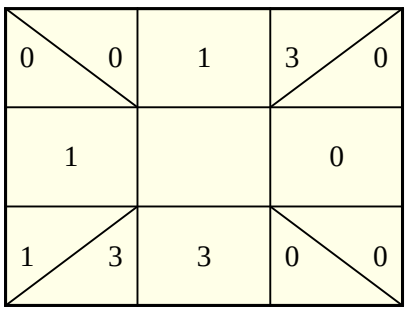

गुरु अष्टकवर्ग 4

2 0	0	0 1
0		1
0 0	0	0 0

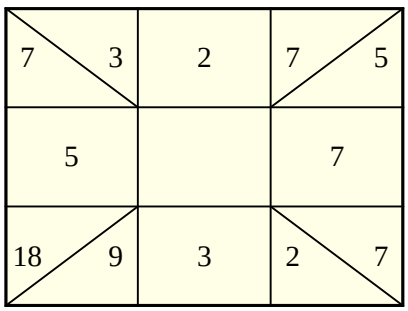

शनि अष्टकवर्ग 12

0 0	1	3 0
1		0
1 3	3	0 0

सर्व अष्टकवर्ग 75

7 3	2	7 5
5		7
18 9	3	2 7

विंषोत्तरी दशा का सेक्षिप्त विवरण

प्ङ्ङ्घ्नण्फ दाश शुरुआत का उम्र (वर्ष : मास :दिवस) (YY:MM:DD) शुक्रउ00:09:30 रविउ20:09:30 चन्द्रउ26:09:30 मंगलऊ 36:09:30 राहुउ43:09:30 गुरुउ61:09:30 शनिउ77:09:30

दशा और भुक्ती का विवरण काल

(साल उ ३६५.२५ दिन)

जन्म के समय दशा की समतुलना = केतु 0 साल, 9 महीने, 30 दिन

दशा	भुक्ती	आरंभ	अन्तिम
के	बु	14-05-1970	13-03-1971
शु	शु	13-03-1971	13-07-1974
‘	र	13-07-1974	13-07-1975
‘	चं	13-07-1975	13-03-1977
‘	मं	13-03-1977	13-05-1978
‘	रा	13-05-1978	13-05-1981
‘	गु	13-05-1981	12-01-1984
‘	श	12-01-1984	13-03-1987
‘	बु	13-03-1987	11-01-1990
‘	के	11-01-1990	13-03-1991
र	र	13-03-1991	01-07-1991
‘	चं	01-07-1991	30-12-1991
‘	मं	30-12-1991	06-05-1992
‘	रा	06-05-1992	31-03-1993
‘	गु	31-03-1993	17-01-1994
‘	श	17-01-1994	30-12-1994
‘	बु	30-12-1994	06-11-1995
‘	के	06-11-1995	12-03-1996
‘	शु	12-03-1996	13-03-1997
चं	चं	13-03-1997	11-01-1998
‘	मं	11-01-1998	12-08-1998
‘	रा	12-08-1998	11-02-2000
‘	गु	11-02-2000	12-06-2001
‘	श	12-06-2001	11-01-2003
‘	बु	11-01-2003	12-06-2004
‘	के	12-06-2004	11-01-2005
‘	शु	11-01-2005	12-09-2006
‘	र	12-09-2006	13-03-2007
मं	मं	13-03-2007	09-08-2007
‘	रा	09-08-2007	27-08-2008
‘	गु	27-08-2008	03-08-2009
‘	श	03-08-2009	12-09-2010
‘	बु	12-09-2010	09-09-2011
‘	के	09-09-2011	05-02-2012

‘	शु	05-02-2012	06-04-2013
‘	र	06-04-2013	12-08-2013
‘	चं	12-08-2013	13-03-2014
रा	रा	13-03-2014	23-11-2016
‘	गु	23-11-2016	19-04-2019
‘	श	19-04-2019	23-02-2022
‘	बु	23-02-2022	11-09-2024
‘	के	11-09-2024	30-09-2025
‘	शु	30-09-2025	29-09-2028
‘	र	29-09-2028	24-08-2029
‘	चं	24-08-2029	23-02-2031
‘	मं	23-02-2031	12-03-2032
गु	गु	12-03-2032	01-05-2034
‘	श	01-05-2034	11-11-2036
‘	बु	11-11-2036	17-02-2039
‘	के	17-02-2039	24-01-2040
‘	शु	24-01-2040	24-09-2042
‘	र	24-09-2042	13-07-2043
‘	चं	13-07-2043	11-11-2044
‘	मं	11-11-2044	18-10-2045
‘	रा	18-10-2045	12-03-2048
श	श	12-03-2048	16-03-2051
‘	बु	16-03-2051	23-11-2053
‘	के	23-11-2053	02-01-2055
‘	शु	02-01-2055	04-03-2058
‘	र	04-03-2058	14-02-2059
‘	चं	14-02-2059	14-09-2060
‘	मं	14-09-2060	24-10-2061
‘	रा	24-10-2061	30-08-2064
‘	गु	30-08-2064	13-03-2067

नीचे खीची गई रेखा, आपके आयुष्य को बताने वाली रेखा नही है।

वर्तमान वर्ष से २५ साल तक पर्यन्तर दशा काल

दशा : मंगल अपहार : राहु

1.रा 09-08-2007 >> 06-10-2007 **2.गु** 06-10-2007 >> 26-11-2007
3.श 26-11-2007 >> 26-01-2008 **4.बु** 26-01-2008 >> 20-03-2008
5.के 20-03-2008 >> 11-04-2008 **6.शु** 11-04-2008 >> 14-06-2008
7.र 14-06-2008 >> 04-07-2008 **8.चं** 04-07-2008 >> 05-08-2008
9.मं 05-08-2008 >> 27-08-2008

दशा : मंगल अपहार : गुरु

1.गु	27-08-2008	>> 11-10-2008	**2.श**	11-10-2008	>> 04-12-2008
3.बु	04-12-2008	>> 22-01-2009	**4.के**	22-01-2009	>> 11-02-2009
5.शु	11-02-2009	>> 08-04-2009	**6.र**	08-04-2009	>> 25-04-2009
7.चं	25-04-2009	>> 24-05-2009	**8.मं**	24-05-2009	>> 13-06-2009
9.रा	13-06-2009	>> 03-08-2009			

दशा : मंगल अपहार : शनि

1.श	03-08-2009	>> 06-10-2009	**2.बु**	06-10-2009	>> 02-12-2009
3.के	02-12-2009	>> 26-12-2009	**4.शु**	26-12-2009	>> 03-03-2010
5.र	03-03-2010	>> 24-03-2010	**6.चं**	24-03-2010	>> 26-04-2010
7.मं	26-04-2010	>> 20-05-2010	**8.रा**	20-05-2010	>> 20-07-2010
9.गु	20-07-2010	>> 12-09-2010			

दशा : मंगल अपहार : बुध

1.बु	12-09-2010	>> 02-11-2010	**2.के**	02-11-2010	>> 23-11-2010
3.शु	23-11-2010	>> 22-01-2011	**4.र**	22-01-2011	>> 10-02-2011
5.चं	10-02-2011	>> 12-03-2011	**6.मं**	12-03-2011	>> 02-04-2011
7.रा	02-04-2011	>> 26-05-2011	**8.गु**	26-05-2011	>> 13-07-2011
9.श	13-07-2011	>> 09-09-2011			

दशा : मंगल अपहार : केतु

1.के	09-09-2011	>> 18-09-2011	**2.शु**	18-09-2011	>> 12-10-2011
3.र	12-10-2011	>> 20-10-2011	**4.चं**	20-10-2011	>> 01-11-2011
5.मं	01-11-2011	>> 10-11-2011	**6.रा**	10-11-2011	>> 02-12-2011
7.गु	02-12-2011	>> 22-12-2011	**8.श**	22-12-2011	>> 15-01-2012
9.बु	15-01-2012	>> 05-02-2012			

दशा : मंगल अपहार : शुक्र

1.शु	05-02-2012	>> 16-04-2012	**2.र**	16-04-2012	>> 07-05-2012
3.चं	07-05-2012	>> 12-06-2012	**4.मं**	12-06-2012	>> 07-07-2012
5.रा	07-07-2012	>> 09-09-2012	**6.गु**	09-09-2012	>> 04-11-2012
7.श	04-11-2012	>> 11-01-2013	**8.बु**	11-01-2013	>> 12-03-2013
9.के	12-03-2013	>> 06-04-2013			

दशा : मंगल अपहार : रवि

1.र	06-04-2013	>> 12-04-2013	**2.चं**	12-04-2013	>> 23-04-2013
3.मं	23-04-2013	>> 01-05-2013	**4.रा**	01-05-2013	>> 20-05-2013
5.गु	20-05-2013	>> 06-06-2013	**6.श**	06-06-2013	>> 26-06-2013
7.बु	26-06-2013	>> 14-07-2013	**8.के**	14-07-2013	>> 22-07-2013
9.शु	22-07-2013	>> 12-08-2013			

दशा : मंगल अपहार : चन्द्र

1.चं	12-08-2013	>> 30-08-2013	**2.मं**	30-08-2013	>> 11-09-2013
3.रा	11-09-2013	>> 13-10-2013	**4.गु**	13-10-2013	>> 10-11-2013
5.श	10-11-2013	>> 14-12-2013	**6.बु**	14-12-2013	>> 13-01-2014
7.के	13-01-2014	>> 26-01-2014	**8.शु**	26-01-2014	>> 02-03-2014
9.र	02-03-2014	>> 13-03-2014			

दशा : राहु अपहार : राहु

1.रा	13-03-2014	>> 08-08-2014	**2.गु**	08-08-2014	>> 17-12-2014
3.श	17-12-2014	>> 23-05-2015	**4.बु**	23-05-2015	>> 09-10-2015
5.के	09-10-2015	>> 06-12-2015	**6.शु**	06-12-2015	>> 18-05-2016
7.र	18-05-2016	>> 06-07-2016	**8.चं**	06-07-2016	>> 27-09-2016
9.मं	27-09-2016	>> 23-11-2016			

दशा : राहु अपहार : गुरु

1.गु	23-11-2016	>> 20-03-2017	**2.श**	20-03-2017	>> 06-08-2017
3.बु	06-08-2017	>> 08-12-2017	**4.के**	08-12-2017	>> 28-01-2018
5.शु	28-01-2018	>> 23-06-2018	**6.र**	23-06-2018	>> 06-08-2018
7.चं	06-08-2018	>> 18-10-2018	**8.मं**	18-10-2018	>> 08-12-2018
9.रा	08-12-2018	>> 19-04-2019			

दशा : राहु अपहार : शनि

1.श	19-04-2019	>> 01-10-2019	**2.बु**	01-10-2019	>> 25-02-2020
3.के	25-02-2020	>> 26-04-2020	**4.शु**	26-04-2020	>> 16-10-2020
5.र	16-10-2020	>> 07-12-2020	**6.चं**	07-12-2020	>> 04-03-2021
7.मं	04-03-2021	>> 04-05-2021	**8.रा**	04-05-2021	>> 07-10-2021
9.गु	07-10-2021	>> 23-02-2022			

दशा : राहु अपहार : बुध

1.बु	23-02-2022	05-07-2022	**2.के**	05-07-2022	28-08-2022
3.शु	28-08-2022	30-01-2023	**4.र**	30-01-2023	18-03-2023
5.चं	18-03-2023	03-06-2023	**6.मं**	03-06-2023	28-07-2023
7.रा	28-07-2023	14-12-2023	**8.गु**	14-12-2023	17-04-2024
9.श	17-04-2024	11-09-2024			

दशा : राहु अपहार : केतु

1.के	11-09-2024	03-10-2024	**2.शु**	03-10-2024	06-12-2024
3.र	06-12-2024	26-12-2024	**4.चं**	26-12-2024	27-01-2025
5.मं	27-01-2025	18-02-2025	**6.रा**	18-02-2025	16-04-2025
7.गु	16-04-2025	07-06-2025	**8.श**	07-06-2025	06-08-2025
9.बु	06-08-2025	30-09-2025			

दशा : राहु अपहार : शुक्र

1.शु	30-09-2025	31-03-2026	**2.र**	31-03-2026	25-05-2026
3.चं	25-05-2026	24-08-2026	**4.मं**	24-08-2026	27-10-2026
5.रा	27-10-2026	10-04-2027	**6.गु**	10-04-2027	03-09-2027
7.श	03-09-2027	23-02-2028	**8.बु**	23-02-2028	27-07-2028
9.के	27-07-2028	29-09-2028			

दशा : राहु अपहार : रवि

1.र	29-09-2028	16-10-2028	**2.चं**	16-10-2028	12-11-2028
3.मं	12-11-2028	01-12-2028	**4.रा**	01-12-2028	20-01-2029
5.गु	20-01-2029	05-03-2029	**6.श**	05-03-2029	26-04-2029
7.बु	26-04-2029	11-06-2029	**8.के**	11-06-2029	30-06-2029
9.शु	30-06-2029	24-08-2029			

दशा : राहु अपहार : चन्द्र

1.चं	24-08-2029	09-10-2029	**2.मं**	09-10-2029	10-11-2029
3.रा	10-11-2029	31-01-2030	**4.गु**	31-01-2030	14-04-2030
5.श	14-04-2030	10-07-2030	**6.बु**	10-07-2030	25-09-2030
7.के	25-09-2030	27-10-2030	**8.शु**	27-10-2030	27-01-2031
9.र	27-01-2031	23-02-2031			

दशा : राहु अपहार : मंगल

1.मं	23-02-2031	>> 17-03-2031	**2.रा**	17-03-2031	>> 14-05-2031
3.गु	14-05-2031	>> 04-07-2031	**4.श**	04-07-2031	>> 03-09-2031
5.बु	03-09-2031	>> 27-10-2031	**6.के**	27-10-2031	>> 18-11-2031
7.शु	18-11-2031	>> 21-01-2032	**8.र**	21-01-2032	>> 10-02-2032
9.चं	10-02-2032	>> 12-03-2032			

दशा : गुरु अपहार : गुरु

1.गु	12-03-2032	>> 24-06-2032	**2.श**	24-06-2032	>> 26-10-2032
3.बु	26-10-2032	>> 13-02-2033	**4.के**	13-02-2033	>> 31-03-2033
5.शु	31-03-2033	>> 07-08-2033	**6.र**	07-08-2033	>> 15-09-2033
7.चं	15-09-2033	>> 19-11-2033	**8.मं**	19-11-2033	>> 04-01-2034
9.रा	04-01-2034	>> 01-05-2034			

गृहस्थान के स्वामी

प्रथम	भाव के स्वामी	(केन्द्र)	: शुक्र
दूसरा	,,	(पनप्र)	: मंगल
तिसरा	,,	(अपोक्लीमा)	: गुरु
चौथा	,,	(केन्द्र)	: शनि
पंचम	,,	(त्रिकोण)	: शनि
छठ्ठा	,,	(अपोक्लीमा)	: गुरु
सातवँ	,,	(केन्द्र)	: मंगल
आठवाँ	,,	(पनप्र)	: शुक्र
नवमा	,,	(त्रिकोण)	: बुध
दशावाँ	,,	(केन्द्र)	: चन्द्र
अग्यारवाँ	,,	(पनप्र)	: रवि
बारहवाँ	,,	(अपोक्लीमा)	: बुध

गृहों का योग

चन्द्र	प्रभावित होता है	केतु
रवि	प्रभावित होता है	बुध शनि
बुध	प्रभावित होता है	रवि शनि
शुक्र	प्रभावित होता है	मंगल
मंगल	प्रभावित होता है	शुक्र
गुरु	प्रभावित होता है	लग्न
शनि	प्रभावित होता है	रवि बुध

एक गृह से दूसरे गृह की अपेक्षा से

चन्द्र	अपेक्षित	राहु
रवि	अपेक्षित	गुरु लग्न
बुध	अपेक्षित	गुरु लग्न
मंगल	अपेक्षित	चन्द्र केतु
गुरु	अपेक्षित	रवि बुध शनि राहु
शनि	अपेक्षित	गुरु लग्न

गृह और उसके स्थान की अपेक्षा से

चन्द्र	अपेक्षा से	पंचम
रवि	अपेक्षा से	प्रथम
बुध	अपेक्षा से	प्रथम
शुक्र	अपेक्षा से	दूसरा
मंगल	अपेक्षा से	दूसरा तिसरा अग्यारवाँ
गुरु	अपेक्षा से	पंचम सातवँ नवमा

शनि अपेक्षा से प्रथम चौथा नवमा

लाभदाई और अपशकुनिय गृहों से

गुरु, शुक्र और चंन्द्र नैसर्गीक पक्षबल के लाभदाई होते हैंशुक्लपक्ष के शष्ठी तिथि से लेकर कृष्णपक्ष के शष्ठी तिथि तक चन्द्र को पक्षबल उपलब्ध रहतै है

आपकी जन्मपत्रिका में चन्द्र पक्षबल से उपलब्ध है और वह अति लाभदाई भी है।

बुध जब अमंगल तत्वों के संयोग में आता है तो वह ओर भी अमंगल और उद्‌वेग उत्पन्न करने वाला गृह हो जाता है

संक्षिप्त में यह कहै जा सकता है कि आपकी कुंडली में बुध अशुभ गृह के प्रभाव के कारण अशुभ फल दिलाता है।

चन्द्र	-	शुभदाई
रवि	-	अशुभकर्ता
बुध	-	अशुभकर्ता
शुक्र	-	शुभदाई
मंगल	-	अशुभकर्ता
गुरु	-	शुभदाई
शनि	-	अशुभकर्ता
राहु	-	अशुभकर्ता
केतु	-	अशुभकर्ता

अशुभ और शुभ फल निरूपण

गृहों से उत्पन्न होने वाले शुभ-अशुभ फलों का निर्णय कुंडलि के स्थानिक स्वामी पर रहतै है। अलग अलग स्थान पर उसका अलग प्रभाव रहता है।

कुंडली में प्रथम स्थान, पांचवा स्थान और नवमाँ स्थान सदा लाभदाई और मंगलमय रहता है।

साधारण दृष्टी से अशुभ गृह चौथे, सातवें और दसवें स्थान के स्वामीत्व को प्राप्त करता है, तब वह लाभदाई और मंगलकारी बनता है।

तीसरे, छठ्ठे और अग्यारवें स्थान के स्वामी अशुभ और अमंगलकारी माने जाते हैं।

साधारण दृष्टी से शुभ गृह चौथे, सातवें और दसवें स्थान के सेवामीत्व को प्राप्त करते है, तब वह अशुभकारी और अमंगलमयी बनते हैं। यह केन्द्राधीपती के दोष के कारण उत्पन्न होनेवाली स्थिती हैं।

दूसरे, आठवें और बारहवें, कुंडली के स्थानीय स्वामी निष्पक्ष प्रकार के या शुभ-अशुभ दोनों से भिन्न प्रकार के फल देने वाले होते हैं।

सूर्य और चन्द्र के छोडकर अन्य सभी गृह, कुंडली में दो स्थानों के स्वामीत्व को स्वीकार करते हैं। उनके समूल प्रत्याधात और प्रभाव को सुश्मता से देखना पडता है।

शास्त्रोक्त ग्रंन्थों से पता चलता है कि आठवे स्थान का निरुपण कुंडली के अन्य संथानों पर रहे गृह स्वामी के विश्लेषण पर अधारित है।

गृह	स्वामीत्व		स्वभाव
चन्द्र	10		अशुभकर्ता
रवि	11		अशुभकर्ता
बुध	9	12	शुभदाई
शुक्र	1	8	शुभदाई
मंगल	2	7	शुभदाई
गुरु	3	6	अशुभकर्ता
शनि	4	5	शुभदाई

नैसर्गीक स्थाई मित्रों की नामावली

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
चं	...	बन्धु	बन्धु	निश्पक्ष	निश्पक्ष	निश्पक्ष	निश्पक्ष
र	बन्धु	...	निश्पक्ष	शत्रु	बन्धु	बन्धु	शत्रु
बु	शत्रु	बन्धु	...	बन्धु	निश्पक्ष	निश्पक्ष	निश्पक्ष
शु	शत्रु	शत्रु	बन्धु	...	निश्पक्ष	निश्पक्ष	बन्धु
मं	बन्धु	बन्धु	शत्रु	निश्पक्ष	...	बन्धु	निश्पक्ष
गु	बन्धु	बन्धु	शत्रु	शत्रु	बन्धु	...	निश्पक्ष
श	शत्रु	शत्रु	बन्धु	बन्धु	शत्रु	निश्पक्ष	...

तात्कालिक मित्रों की नामावली

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
चं	...	शत्रु	शत्रु	बन्धु	बन्धु	बन्धु	शत्रु
र	शत्रु	...	शत्रु	बन्धु	बन्धु	शत्रु	शत्रु
बु	शत्रु	शत्रु	...	बन्धु	बन्धु	शत्रु	शत्रु
शु	बन्धु	बन्धु	बन्धु	...	शत्रु	शत्रु	बन्धु
मं	बन्धु	बन्धु	बन्धु	शत्रु	...	शत्रु	बन्धु
गु	बन्धु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	...	शत्रु
श	शत्रु	शत्रु	शत्रु	बन्धु	बन्धु	शत्रु	...

पंचदा मित्रों की नामावली

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
चं	...	निश्पक्ष	निश्पक्ष	बन्धु	बन्धु	बन्धु	शत्रु
र	निश्पक्ष	...	शत्रु	निश्पक्ष	अति बन्धु	निश्पक्ष	अति शत्रु
बु	अति शत्रु	निश्पक्ष	...	अति बन्धु	बन्धु	शत्रु	शत्रु
शु	निश्पक्ष	निश्पक्ष	अति बन्धु	...	शत्रु	शत्रु	अति बन्धु
मं	अति बन्धु	अति बन्धु	निश्पक्ष	शत्रु	...	निश्पक्ष	बन्धु
गु	अति बन्धु	निश्पक्ष	अति शत्रु	अति शत्रु	निश्पक्ष	...	शत्रु
श	अति शत्रु	अति शत्रु	निश्पक्ष	अति बन्धु	निश्पक्ष	शत्रु	...

शक्तीबल बतानेवाली नामावली शष्टी अंश के आधारपर (दृकबल)

गृह अपेक्षाकी दृष्टी से अपेक्षित दृष्य गृह

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
शुभ दृष्टी							
चन्द्र	.	20.94	24.95	7.46	8.84	11.57	25.79
शुक्र	29.91	.	.	.	.	21.95	.
गुरु	.	47.51	51.51	34.02	35.41	.	52.35
शुभ बल	29.91	68.45	76.46	41.48	44.26	33.52	78.14
अशुभ दृष्टी							
रवि	-39.06	.	.	.	.	-10.03	.
बुध	-35.05	.	.	-2.49	-1.10	-26.05	.
मंगल	-32.69	.	.	.	.	-19.18	.
शनि	-34.21	.	.	-3.33	-1.94	-29.41	.
अशुभ शक्ती	-141.02	.	.	-5.82	-3.04	-84.67	.
दृष्टी पींड	-111.11	68.45	76.46	35.66	41.21	-51.15	78.14
द्रिक बल	-27.78	17.11	19.11	8.91	10.30	-12.79	19.53

षड्बल

चं	र	बु	शु	मं	गु	श
उच्च बल						
27.08	53.38	12.29	40.05	21.31	30.04	0.06
सप्तवर्गज बल						
105.00	67.50	106.88	120.00	123.75	41.25	48.75
ओजयुग्मरस्यांश बल						
15.00	30.00	30.00	30.00	15.00	15.00	30.00
केन्द्र बल						
30.00	60.00	60.00	30.00	30.00	60.00	60.00
द्रिखान बल						
0	0	0	15.00	0	15.00	0
संयुक्तस्थान बल						
177.08	210.88	209.16	235.05	190.06	161.29	138.81
संयुक्त दिगबल						
6.51	32.55	0.73	18.46	40.61	53.61	58.71
नतोन्नत बल						
29.08	30.92	60.00	30.92	29.08	30.92	29.08
पक्षबल						
67.92	26.04	26.04	33.96	26.04	33.96	26.04
त्रिभाग बल						
0	0	0	0	0	60.00	60.00
अब्द बल						
0	0	0	0	0	15.00	0
मास बल						
0	0	0	0	0	0	30.00
वर बल						
0	0	0	0	0	45.00	0
होल बल						
60.00	0	0	0	0	0	0
आयान बल						
17.81	107.20	50.97	59.30	59.10	16.15	9.70
युध्ध बल						
0	0	0	0	0	0	0
संयुक्त काल बल						
174.82	164.16	137.01	124.18	114.22	201.02	154.82
संयुक्त चेष्टाबल						
0	0	52.95	19.09	9.27	53.41	2.49
संयुक्त नैसर्गीक बल						
51.43	60.00	25.70	42.85	17.14	34.28	8.57
संयुक्त द्रिकबल						
-27.78	17.11	19.11	8.91	10.30	-12.79	19.53
संपूर्ण षड्बल						
382.07	484.70	444.67	448.55	381.61	490.82	382.93

षाढबाला संक्षिप्त टेबुल

चं	र	बु	शु	मं	गु	श
संपूर्ण षड्बल						
382.07	484.70	444.67	448.55	381.61	490.82	382.93
संपूर्ण शडबल (रूप)						
6.37	8.08	7.41	7.48	6.36	8.18	6.38
मौलीक ज़रूरतें						
6.00	5.00	7.00	5.50	5.00	6.50	5.00
षडबल अनुपात						
1.06	1.62	1.06	1.36	1.27	1.26	1.28
संबन्धी स्थानक						
6	1	7	2	4	5	3

इष्टफल, कष्टफल की नामावली

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
इष्टफल	30.33	50.50	25.50	27.66	14.06	40.05	0.39
कष्टफल	29.28	9.00	18.35	28.56	44.30	14.05	58.71

भावापेक्षीत बलवंत स्थिती की यादी (नामावली) शष्टीआंशमें

बुध गृह का प्रकृति संयोग से निश्चित किया जाता है ।

गृह अपेक्षाकी दृष्टी से भावमध्य की अपेक्षा से गृहों का द्रष्यभाव

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
शुभ दृष्टी											
चन्द्र											
6.82	9.79	4.73	5.23	13.62	9.79	5.96	2.29	.	.	.	1.46
शुक्र											
0.70	13.30	11.75	8.08	4.25	0.42	.	.	.	3.17	10.25	7.92
गुरु											
.	9.28	32.95	36.33	12.05 30.00	37.11	50.42	35.72	21.03 30.00	6.33	.	.

शुभ बल

7.52	32.37	49.43	49.64	59.92	47.32	56.38	38.01	51.03	9.51	10.25	9.39

अशुभ दृष्टी

रवि

-12.09	-12.05	-8.38	-4.71	-0.88	.	.	.	-2.87	-9.34	-8.38	-1.61

बुध

-58.90	-44.21	-29.51	-14.82	.	.	.	-0.79	-15.97	-44.82	-29.03	-3.16

मंगल

.	-14.69	-11.40	-7.73 -3.75	-3.90	-0.08	.	.	.	-3.52	-10.94	-7.58 -3.75

शनि

-14.52	-10.84	-7.17	-3.50 -11.25	.	.	.	-0.41	-4.41 -11.25	-11.00	-6.84	-1.63

अशुभ शक्ती

-85.51	-81.79	-56.47	-45.75	-4.78	-0.08	.	-1.20	-34.50	-68.67	-55.19	-17.73

दृष्टी पींड / द्रिक बल

-77.99	-49.43	-7.04	3.89	55.14	47.25	56.38	36.81	16.52	-59.17	-44.94	-8.34

भावबल की यादी

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
भावाधीपती का बल											
448.55	381.61	490.82	382.93	382.93	490.82	381.61	448.55	444.67	382.07	484.70	444.67
भावद्रिगबल											
60.00	10.00	10.00	60.00	20.00	40.00	30.00	40.00	20.00	0	50.00	50.00
भावद्रिष्टीबल											
-77.99	-49.43	-7.04	3.89	55.14	47.25	56.38	36.81	16.52	-59.17	-44.94	-8.34
संपूर्ण भावबल											
430.56	342.18	493.78	446.83	458.07	578.07	467.99	525.36	481.19	322.90	489.76	486.32
भावबल के रुप											
7.18	5.70	8.23	7.45	7.63	9.63	7.80	8.76	8.02	5.38	8.16	8.11
संबन्धी स्थानक											
10	11	3	9	8	1	7	2	6	12	4	5

कुजदोष

जन्मपत्रिका में मंगल के प्रभाव को महत्वपूर्ण द्रष्टी से देखा जाता है। मंगल या कुज विवाह संबन्धी कार्यों पर अपना प्रभाव डालने वाला होता है। जब मंगल जन्मकुंडली के सातवें या आठवें स्थान पर रहता है तो अमंगलकारी या दोषयुक्त माना जाता है। शास्त्रोक्त ग्रन्थों के आधार से यह पता चलता है कि सातवें या आठवें स्थान पर रहते हुए मंगल, दोष ग्रस्त होकर भी उसका प्रभाव खास कारण से क्षीण हो

जाता है या अप्रिय हो जाता है। कुज दोष या मंगलदोष को समझने के लिये यहाँ विस्त्रित रूप से विश्लेषण किया गया है। निम्न लिखित बातों से पता चलता है कि आपकी जन्मपत्रिका में मंगल किस प्रकार शुभ-अशुभ फल उत्पन्न करता है।

इस जन्मपत्रिका में मंगल, जन्म कुंडली में आठवाँ स्थानपर रहा है।

यह स्थिती दोषपूर्ण है।

जन्मकुंडली में लग्न स्थान की अपेक्षा मंगलदोष का विश्लेशण किया गया है।

इस जन्मकुंडली में मंगल का दोष दिखाई देता है।

मौढय स्थिती का विवरण।

जब कोई गृह सूर्य के निकट आता है तब वह मौढ्य स्थिती प्राप्त करता है। मौढ्य दशा में गृह अशुभकारी स्थिती उत्पन्न करता है। सूर्य की अपेक्षा से बारह रेखांश से चन्द्र सत्रह रेखांश से मंगल, तेरह रेखांश से बुध, अग्यारह रेखांश से गुरु, नव रेखांश से शुक्र और पंद्रह रेखांश से शनी मौढ्य स्थिती में माना जाता है।

बुध मौढ्य दशा में रहा है।
शनि मौढ्य दशा में रहा है।

ग्रहयुध्ध

सूर्य और चन्द्र के सिवा अन्यग्रह जब भी एक रेखांश से ज्यादा समीप आते हैं तो ठग्रहयुध्ध' की स्थिती पैदा होती है। ग्रहयुध्ध में जय-पराजय के बारे में अलग-अलग विचार धार बनी रही है। उसकी एक झलक इस प्रकार है।
अन्य के बिच उत्तर दिशा की ओर रहे ग्रह विजई बनते हैं।

इस जन्मकुंडली में कोई भी ग्रहयुध्ध में झुटा नहि है।

उत्थान, क्षीण, मौढ्य, युध्ध और वक्र स्थिती का संक्षिप्त विवरण।

गृह	श्रेष्ठतम स्थिती।/ क्षीण या नाजुक स्थिती	संयोजन	ग्रहयुध्ध	विपरीत परिस्थिती	बालादि अवस्था
चं					कुमारावस्था
र	श्रेष्ट समय				मित्रवस्था
बु		सयहोग		विपरीत परिस्थिती	वृदावस्था
शु					बालावस्था
मं					बालावस्था
गु				विपरीत परिस्थिती	बालावस्था
श	क्षीण परिस्थिती	सयहोग			वृदावस्था

जन्म कुंडली में गृहों के मुख्य प्रकार के संयोजन से उत्पन्न होनेवाली स्थिति को योग कहते हैं। योग व्यक्ति के जीवन प्रवाह और भविष्य को असर करने वाला होता है। कुछ योग गृहों के साधारण मिलने या संयोजन से उत्पन्न होते हैं। जबकि दूसरे कुछ योग जो हैं वह गृहों के खास प्रकार के संयोजन अथवा जन्मकुंडली में खास स्थान गृहण करने से उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार के सैकडों मिलन, संयोजन इत्यादी के विवरण पुरातन ज्योतिष शास्त्र के ग्रन्थों में दिये गये हैं। कुछ संयोजन से उत्पन्न होने वाले योग लाभदायी रहते हैं तो कुछ से हानि अथवा अशुभकारी फलों की प्राप्ति होता है।

आपकी जन्म पत्रिका में कुछ मुख्य महत्वपूर्ण गृहों से उत्पन्न होनेवाले योगों का विवरण यहाँ दिया गया है।

नीचभंगराज योग

लक्षण :
शनि क्षीण और बलहीन स्थिती उत्पन्न हुई है
दुर्बल भाव का अधिपति चन्द्र केन्द्र में है ।
दुर्बल राशी में जो गृह आनन्द पूर्ण है, लग्न केन्द्र में उपस्थित है ।
आनन्दातिरेक राशी के गृह का अधिपति चन्द्र केन्द्र में है ।

आप अतिभाग्यवान होंगे और श्रेष्ठ उच्च स्थान प्राप्त करेंगे। आप के व्यवहार में न्याय और नीति की झलक प्राप्त होगी।

राज योग

लक्षण :
प्रथम और सातवँ भाव के अधिपति एक दूसरे के दृष्टि में है ।
चौथा और नवमा भाव के अधिपति एक दूसरे के दृष्टि में है ।

इस जन्मकुण्डली में लाभदायक राजयोग दिखाई पडता है ।
आप शक्ति और अधिकार पद तक पहुँच जाएगों ।

अमलयोग

लक्षण : लग्नस्थल या चन्द्रसथान से दशवें स्थान पर लाभदाई श्रेष्ठ गृहों का रहना।

आप अमला योग में जन्म हैं। आप दीर्घायु तथा धनी होंगे। अपनी पवित्रता के विचारों और कर्मों से समाज में आदर प्राप्त करेंगे। आप ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करेंगे। आप को लोग निष्कलंक और चरित्रवान समझेंगे। किसी भी परिस्थिति में आपका मन चंचल न रहेगा। ऐश्वर्य, कीर्ति और मान-सम्मान का संगम इस योग में होता हैं। अतुलित कीर्ति प्राप्त होगा।

कहल योग

लक्षण : चौथे और नवमें स्थान के स्वामी संयुक्तता से केन्द्रस्थान पर और लग्नाधिपती अती बलवंत स्थिती में।

खल योग के कारण आप जिद्दी स्वभाव के बनेंगे। आर सभी संजोगों का सामना करने वाले शक्तिशाली व्यक्ति बनेंगे। ठीक प्रकार

जानकारी प्राप्त करने से पहले ही किसी भी कार्य में जुट जाना आप की आदत हैं। राष्ट्र के संरक्षण सेनानी बनने के सभी लक्षण आप में उपस्थित हैं।

सनक योग

लक्षण : पाँचवे और छठ्ठे स्थान के स्वामी स्वकेन्द्र पर टिके हैं और लग्नाधिपती बलवान रहै है।

आप सुखलोलुपता भरे जीवन के चहेते हैं। आप न्यायप्रिय स्वभाव के हैं और जीवन के सभी कृत्यों में नैतिकता का आप मूल्यांकन करने वाले हैं। आप के कार्य और वाणी दोनों में सत्य की झलक दिखाई देती है। आप को प्रभु ने पत्नी, बच्चे और ज़मीन से अनुगृहित किया है। आप विज्ञान और व्यवसाय में अभिरुचि रखते है। आपकी आयु लंबी है।

त्रिगृह योग

लक्षण : तीन गृह एक ही भाव में स्थापित है ।
रवि, बुध, शनि भाव में है ।

आपका लापरवाह आपको दूसरों का परिहास पात्र बनाएगों । आपको ऐसे परिस्थितियों से गुजरना पड़ेगा जब दोस्त और रिशतेदार आपको अस्वीकार करे । अपने कमजोरियों को समझकर उसके अनुसार अपने मन को नियंत्रत करना चाहिए ।

द्विगृह योग

लक्षण : दो गृह एक ही भाव में स्थापित है ।
शुक्र, मंगल भाव में है ।

दूसरों का स्नेह और विश्वास पाने के लिए किसी भी हत तक जाना चाहिए । किसी अपवात विषयों में शमिल नहीं होना चाहिए । बिना किसी कारण के दूसरों से जगड़ने और अविश्वास रहने की प्रवृत्ति को छोड देना चाहिए । क्योंकि आप हृदय के बहुत अच्छे है आप स्वंय नियंत्रण कर सकते है और दूसरों के अनुमोदन को प्राप्त कर सकते है ।

आपके जीवन और व्यवहार पर गृहों के प्रभाव को यह विज्ञापन व्याखा करता है ।इस विज्ञापन में उपस्थित आवृत्ति और विरोध आपके जीवन पर गृहों के परस्पर प्रभाव को सूचित करता है ।

व्यक्तित्व, शारीकि बनावट, सामाजिक स्थिति

जन्मकुण्डली का पहला भाव एक व्यक्ति के व्यक्तित्व, शारीरिक बनावट, सामजिक स्थिति और प्रसिद्वि को सूचित करता है ।

लग्न तुलाराशि होने से कफ़ प्रवृत्ति का शारीरिक गठन होगा। आप सत्यभाषी और सत्यकामी बनेंगे। श्रेष्ठ पारितोष मिलने की संभावनायें है। जब भी मन में मलिन वृत्ति के विचार आते हों और मन चंचल होता हो तो ईश्वर भक्ति का सहारा लेना लाभदायी होगा। बातचीत से आप सत्यभाषी व्यक्ति माने जायेंगे। बुज़ुर्गों के प्रति आदरभाव रखनेवाले व्यक्ति हैं। गृहसंचालक या उच्च पद पर रहकर अपनी कार्य शक्ति को ठीक प्रकार से अभिव्यक्त कर सकते हैं। जीवन कलंक रहित एवं निर्मल होगा। जीवनकाल में अनेक सुखद और आनन्ददायी घटनायें घटेगी। उनका आस्वादन करने का सद्भाग्य प्राप्त है। जलक्रीड़ा और समुद्र के सफ़र के बड़े शौकीन हैं। कठिन से कठिन कार्य सिद्ध करने वाले पुत्रों की प्राप्ति होगी। आपके पुत्र सत्यशील और ख्याति प्राप्त करने वाले होंगे। प्रिय व्यक्तियों से शत्रुत्व उत्पन्न होने की संभावना होने के कारण कार्यकुशल बनना आपके लिए अनिवार्य है। आपके क्लेश का कारण कोई स्त्री या पुरुष धन हो सकता है। आपका शरीर कफ़ प्रवृत्ति का है और आहार की वजह से अजीर्ण के रोगों की संभावनायें दिखाई देती है। शुक्र संबन्धी विकारों से बचकर रहना भी हितकर होगा। विपरीत लिंगी व्यक्ति का भ्रातृ-भागिनीवत संबन्ध भी लोकोपवाद का कारण हो सकता है। खेत या अधिक जल से उत्पन्न वस्तु या तरल पदार्थ का व्यवसाय लाभप्रद होगा।

कारखाना स्थापित करने का भाग्य भी दिखाई देता है। सुंदर बगीचे का निर्माण योग है। विदेश यात्रा लाभदायी मान सकते हैं। बारहवें स्थान पर कन्याराशि होने के कारण आप पर विपरीत योनि के लोगों का विशेष प्रभाव होने की संभावना है। विवाह और अन्य आडंबर पूर्ण कार्यों में यथा योग्य धन खर्च करने की सुविधा प्राप्त होगी। गुण संपन्नता और उत्तम व्यापार के द्वारा अतुलित धन संचय होगा। अपने कुल में श्रेष्ठत्व प्राप्त होगा। आयु का ३२वाँ, ३३वाँ, ३४वाँ, ३५वाँ अथवा ३६वाँ वर्ष चमत्कारिक हो सकता है।

भाग्योदय निमित्त संपत्ति की उपलब्धी होगी। बड़े होटलों का संचालनकार्य, वस्तु वितरण, व्यवसाय इत्यादि के माध्यम से जीवन में सफलता के फूल खिल सकते हैं। हस्तकला, संगीत इत्यादि कलाओं के आराधक हैं। जीवन के पूर्वार्ध काल में अनेक कष्टों का सामना करना होगा। फिर भी ज़्यादा विलंब होने पर भी जीवन में प्रगति सुनिश्चित होगी। जीवन के १६,१८,२३,२५,२७,३२,३९, ४६ और ५३ वाँ वर्ष आपके लिए अति प्रधान हैं।

लग्नाधिपति आठवें स्थान पर हैं। शिक्षण क्षेत्र में आपकी उन्नति सुनिश्चित है। अपने स्वास्थ्य की ओर लापरवाह रहने से अनेक समस्याओं का सामना करना होगा। अनेक लौकिक कार्यों के प्रति अभिरुचि जागृत होगी। जुए के प्रति लगाव उत्पन्न होगा। आपकी नैतिकता की ओर कोई आँख उठाके देखे ऐसे कार्यों से दूर रहना चाहिए। बुरे समय में कुछ संकटों का सामना करना होगा। दुर्भाग्यपूर्ण घटना जीवन में घटित हो सकती है। अनेक व्यक्तियों के दुःख और विरह वेदना बाँटने का दुर्भाग्य प्राप्त होने की संभावना है। आकस्मिक धनाढ्य बनने की कामना हानिप्रद होगी। व्यवसाय और प्रेम संबन्ध में बडा जोखिम न लेना ही बुद्धिमानी होगी।

गुरु प्रथम स्थान पर रहने से सौन्दर्यपूर्ण शरीर प्राप्त होगा। विज्ञान में अति अभिरुचि प्राप्त होगी। आप निर्भय और व्यवहार से विनम्र हैं। दीर्घायुषी होने का भाग्य प्राप्त है।

लग्न उसी भाव में उपस्थित है यह सूचित करता है कि आप शक्ति और अधिकार युक्त पदों को हासिल करेगों ।

क्योंकि सूर्य लग्न से प्रभावित है आप सरकारी उधोग या अन्य आन्दरणीय पदों पर बैठ सकते है । आप अपने पिता से बिना किसी मुसीबतों के धन और सम्पति पा सकते है ।

पहली भाव में बुध गृह का प्रभाव विध्या समंबधी विषयों के लिए उचित है ।

आपके जन्मकुण्डली में शनि गृह का भाव पहली भाव में है और यह अच्छी सूचना नहीं है । दूषित वातवरण और संदेह युक्त दोस्तो से दूर रहना चाहिए ।

धन, भूमि और संम्पति

भूमि, सम्पति, धन, परिवार, बोली, भोजन आदि कुछ महत्वपूर्ण चीजे है जो दूसरी भाव द्वारा सूचित किया गया है ।

दूसरा भावाधिपति आठवें स्थान पर होने से स्थायी संपत्ति पर्याप्त प्राप्त होगी। विवाह कार्यों में कठिनाईयों का सामना करना होगा। भ्रातृसुख की कमी रहना संभव होगी। अथवा भाइयों से कम पटेगी। पत्नी का स्वास्थ्य चिन्ता का कारण हो सकता है। अथवा कुछ समय के लिए अलगाव या प्रबल मतभेद हो सकता है।

ऐसा देखा जाता है कि शुक्र गृह दूसरे देव से संयोग है । आपको साहित्य कला और लेखाचित्र कला में दिलचस्पी होगा । आप द्वारा किए गए कार्यों में भावुकता और उत्तेजन होगा ।

भाई/बहन

जन्मकुण्डली में उपस्थिति केन्द्र, त्रिकोंण था उच्च भाव में यह सूचित करता है कि अपने भाई - बहन, धैर्य और बुद्वि को सूचित करता है ।

तीसरे भाव का अधिपति लग्न स्थान पर रहने से भक्तिपूर्ण कार्यों में नैसर्गिक रुचि उपलब्ध होगी। धैर्यपूर्ण स्वयं पुरुषार्थ के माध्यम से जीवन में उन्नति प्राप्त होगी। आप अपार बुद्धिमान व्यक्ति हैं। आप की बुद्धिमता अभ्यास और स्कूली शिक्षा से मुक्त है। आप की बुद्धि का विकास स्वतंत्र रूप से होगा। हर कार्य में विकारयुक्त अभिव्यक्ति संभव है। आप का क्रोध अनेक अनिष्ट संजोग उत्पन्न कर सकता है। इस कारण अपने क्रोध को लगाम देना आप के ही हित में है। नियम-संयम, आवश्यकतानुसार पौष्टिक आहार और समय-समय पर चिकित्सक का परामर्श ही आपको पूरी तरह स्वस्थ रख सकता है। अपने भाग्य के आप स्वयं ही निर्माता होंगे।

संपत्ति, विध्या क्षेत्र इत्यादि के विषय में।

चतुर्थ भाव, चतुर्थेश कारक और संबन्धित ग्रहों की योग, युतिदृष्टि के माध्यम से संपत्ति विद्या-बुद्धि, माता, भूमि , भवन और वाहन आदि का सूचित करता है। इस पत्रिका में इस विषय का विवरण निम्नांकित है।

आपके जन्मपत्रिका में चौथे भाव का मालिक सातवें भाव में स्थित हैं। सामान्यतः आप सुखी होंगे। ज़मीन और बड़े मकान आपके आधीन होंगे। अभ्यास और अन्य कार्यों के संपूर्ण विजयी बनने में अति कठिन प्रयास करनेवाले हैं। इस
कारण सफलता आपका साथ सदा देगी। 'सभायां मूकवद्भवेत्' जन सभाओं को संबोधित करने में कठिनाई
अनुभव होगी।

चौथे भाव का स्वामी शनि है। नेता पद और राजकाज के निपुणता का योग है। परिवार का कारोबार अति निपुणता से चलाने के योग्य हैं। विद्यालय में और खेल कूद के मैदान में अपने साथियों को श्रेष्ठ नेतृत्व प्रदान कर सकते हैं। यह कला, आप में बालावस्था से ही प्रकट हो उठेगी। लोक समर्थन जुटापाना कठिन न होगा।

राजकीय हस्तक्षेप, कानूनी झंझटों और कोर्ट-कचहरियों की परेशानियों से संपत्ति विषयक मामलों में हानि होना का संभव है। सफलता के लिए पुनः पुनः परिश्रम करना आवश्यक होगा।

चन्द्र दुष्ट ग्रहों से प्रभावित है। इस कारण मातृ सुख और मानसिक स्वस्थता के लिए आपको प्रयास करना होगा।

भावाधिपति, बृहस्पति का स्थान अनुकूल रहने से अशुभ ग्रहों के कुप्रभाव में क्षीणता का अनुभव होगा। अन्य चतुर्थ भाव से संबन्धित कार्यों में सफलता प्राप्त करना सरल होगा।

बच्चे, मन, बुद्वि

जन्मकुण्डली में उपस्थित पाँचवी भाव बच्चे, मन और बुद्वि को सूचित करता है ।

पाँचवां भावाधिपति सातवें स्थान पर रहने से हर कार्य में मान्यता उपलब्ध होगी। भक्तिमय कार्यों में श्रद्धा उत्पन्न होगी। परोपकारी कार्यों में निश्चित ही अभिरुचि जाग्रत होगी। आप सत्यवादी और सत्कार्यप्रिय व्यक्ति हैं। शिक्षा क्षेत्र में सफलता निरन्तर मिलती रहेगी। लेखन या प्रकाशन कार्य से संबन्ध लाभदायी होगा। संतान न्यून पर योग्य होगी।

रोग, शत्रु , मुसीबतें

छठा भाव रोग, शत्रु और विधों को सूचित करता है ।

छठ्ठा भावाधिपति लग्न स्थान पर रहने से स्वास्थ्य में निर्बलता का अनुभव होगा फिर भी जीवनकाल में श्रेष्ठ प्रसिद्धि और मान-सम्मान उपलब्ध होगा। संबन्धियों से शत्रुता का अनुभव होगा। धन, दौलत और समुदाय के बीच मिली मान्यता में कोई कमी नहीं रहेगी। पुत्र सुख के लिए उपायादि करने का योग है।

वैवाहिक जीवन और सातवें स्थान की ग्रहदशा।

वैवाहिक जीवन से जुड़े हुए गुणदोष का निर्णय, सातवें स्थान, सप्तमेश, सप्तमकारक और अन्य ग्रहों की युति-दृष्टि के आधार पर किया जाता है।

सातवाँ भावाधिपति आठवें स्थान पर है। परम्परा से भिन्न प्रकार का विवाह होने की संभावना है। आप अपनी सहधर्मिणी से प्रभावित रहनेवाले व्यक्ति हैं। अन्य स्त्री के साथ ज़्यादा मिलना-जुलना, आप की पत्नी की इच्छा के विरुद्ध होगा। दफ़तरी कार्य से अथवा अन्य कारण से अनेक महिलाओं से मिलना जुलना होगा। अपने सहयोगियों से
सावधान रहने की हिदायत पत्नी से बार-बार मिलती रहेगी। इस हिदायत के अनुसार चलना पड़ेगा। संपूर्ण समर्पण भाव से रहनेवाली पत्नी होते हुए भी कभी-कभी वह शंका का कारण बन जा सकता है। आप की नियंत्रण सीमा को पार कर रही है ऐसा भ्रम उत्पन्न होगा। घर खर्च को लेकर अनेक वाद-विवाद होने की संभावना है। श्रेष्ठ मित्रों के माध्यम से इन विवादों का हल निकाला जायेगा। इस ग्रह की दशान्तर्दशा में पत्नी को शारीरिक कष्ट से गुज़रना पड़ जा सकता है।

दक्षिण दिशा से उत्तम जीवन संगिनी प्राप्त होने की संभावना रखते हैं।

आपकी पत्नी गेहुंवर्णी, ऊँचे कद की सौन्दर्यवती युवती होगी।

सूर्य सातवें स्थान पर हैं। आप सौन्दर्यवान और सुन्दर प्रकृति के पुरुष हैं। आप से लोगों को शीतलता और शाँति प्राप्त होता है। स्वबन्धु की ओर विनयपूर्ण व्यवहार रखने का प्रयास रखना होगा अन्यथा मानसिक और व्यवहारिक संबन्धों को क्षति पहुँचेगा। आपके मित्रों की संख्या अल्प है। मैत्री का विस्तार बढ़ाना आपके लिए लाभदायक रहेगा। विवाह कार्य में विलंब हो सकता है। यात्रा से संबन्ध रखनेवाला काम लाभदायक रहेगा। अपने कुल को कलंकित करनेवाले हर कार्य से दूर रहना योग्य होगा। अपरिचित लोगों के साथ नये संबन्ध स्थापित करने से पहले सूक्ष्म अवलोकन करना अनिवार्य है। अन्यथा वे संबन्ध दुःख के कारण रूप बन सकते हैं। अपवादों का शिकार बनने की संभावनायें रखते हैं। उच्च अधिकारियों से संबन्ध बिगड़ने की संभावनायें भी हैं। वैवाहिक जीवन में अलगाव अथवा कटुता का प्रवेश न हो पाये, इसका ध्यान रखना आवश्यक होगा।

बुध सातवें स्थान पर है। अनन्य कार्यशक्ति प्रदर्शित करने में शक्तिमान है। आपके सहवास और परिचय प्राप्ति के अनेक इच्छुक होंगे। आप

रसिक स्वभाव के व्यक्ति हैं। हर कार्य कलात्मक दृष्टि से पार लगाने के आदि हैं। वस्त्र परिधान की कला में निपुण हैं। कानून और नियम संविधान के अभ्यास के रुचिकर हैं। साहित्य और लेखन कार्य में प्रगति होगा। ठीक सोचने के बाद, धनवान कन्या से विवाहित होने की संभावना रखते हैं। अनेक अभिलाक्षाँए जन्म लेगा । आप व्यवहार कुशल हैं। शारीरिक संबन्धों की अपेक्षा मानसिक संबन्धों में अधिक रुचि रहेगा।

शनि सातवें स्थान पर है। विवाह में विलंब और कुछ मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा। विवाह के बाद पति पत्नी एक दूसरे के अधीन रहेंगे। जीवनसाथी के हाव-भाव, रूप-रंग, आकृति-प्रकृति इत्यादि की कल्पना मन में है जो आप किसी के सामने व्यक्त नहीं करते। आप का विवाह संजोगाधीन हुआ है। आप एक परिश्रमशील कार्यकुशल पुरुष है। आप का निवास स्थान दूर देश में होना संभव है। सुदृढ़ वैवाहिक जीवन प्राप्त होगा। राष्ट्रीय कार्यों में सफलता मिल सकता है। अनेक सम्मानपूर्ण पद की उपलब्धी दिखाई देते है। सिरदर्द से सावधान रहना आवश्यक है। सिर रोग के लक्षण प्रकट होते ही डाक्टरी सलाह-सूचना प्राप्त करना आपके लिए अनिवार्य है। विवाह की बात एक से अधिक स्थानों पर होना संभव होगा। जीवन साथी में गांभीर्य व प्रौढ़ता होगी।

सूर्य गुरु के स्वाधीन रहा है। इस कारण आपकी पत्नी आत्मीय स्वभाव की ओर परिपक्व व्यक्तित्वपूर्ण व्यक्ति होगी। जीवन में योग्य मार्गदर्शन मिलता रहेगा और इस कारण आप भाग्यवान समझे जायेंगे।

सातवें स्थान पर गुरु की दृष्टि होने के कारण अनेक दोषपूर्ण फलों में कमी होग । अनेक लाभ भी होंगे।

दीर्घायु , मसीबतें

आठँवा भाव दीर्घायु, बैध्य चिकित्स और मुसीबतों को सूचित करता है ।

आठवाँ भावाधिपति आठवें स्थान पर रहने से आप की आयु औसत आयु से अधिक रहेगी। जीवनसाथी के माध्यम से लाभ की संभावना है। जीवनसाथी के प्रति शंका-कुशंका जाग्रत होगी। आकस्मिक रूप से धनी बनने का स्वप्न पूरा नहीं होगा। दांपत्य की मधुरता के लिए अधिक प्रयत्न करना होगा।

शुक्र आठवें स्थान पर रहा है। आप अटूट संपत्ति के मालिक हैं। फिर भी धन खर्च करते वक्त सोच समझ के साथ ही कदम उठानेवाले व्यक्ति हैं। स्वयं या स्वयं के सहयोगियों में कोई कमी होने की आशंका आपको सतायेगी। जीवन में चारों ओर दिव्यता प्रसारित होने युक्त जीवन प्रणाली का योग दिखाई देता है।

मंगल (कुज) आठवें स्थान पर रहा है। आपका पत्नी के साथ का व्यवहार रूष्ट होगा। कार्य की सफलता को प्राप्त करने के लिए कोई अयोग्य मार्ग भी स्वीकारने में आप तत्परता दिखायेंगे। जीवनकाल में शल्यक्रिया करवानी होगी। आप निरपराधी होते हुए भी आक्षेपित होने की संभावना रखते हैं। अपरिचित व्यक्ति के साथ यौन संबन्ध विकार कारक हो सकता है।

क्योंकि आठवों देव आठवी भाव में ही उपस्थित है दीर्घयु से सम्बधित निषेधार्थक विषय नहीं है ।

भाग्योदय, अनुभूतियाँ और पैत्रिक उपलब्धियों का विवरण।

नवमा भावाधिपति सातवें स्थान पर है। विदेशी संपर्क के माध्यम से अनके प्रकार की प्रगति होना संभव है। श्रेष्ठ और अनुयोग्य परिवार से सौन्दर्यवान कन्या से विवाहित होने का योग प्राप्त है। विदेशी संस्थानों से धन संबन्ध स्थापित करने में पिताजी की स्वाधीन शक्ति आपको लाभदायक होगा होगी। जीवन साथी के माध्यम से भाग्य और धन की वृद्धि होगा।

नवमा भावाधिपति गुरु (बृहस्पति) के सानिध्य में है। अतः अनेक प्रगति का कारण बन सकता है। भाग्येश आपको अनिष्ठों से बचा सकता है। परिश्रम करने से सफलता प्राप्त होग ।

हरा रंग आप के लिए भाग्योदय का कारण बन सकता है। आप हरे रंग की कोई वस्तु धारण करके महत्वपूर्ण व्यक्तियों से अथवा ऊँचे

संस्थानों से मुलाकात करने जायें तो सफलता की आशा कर सकते हैं। आप प्रकाशन, दलाली या वैदिक काम से संबन्ध रखते हों तो हरा रंग धारण करने से भाग्योदय होगा। इन्टरव्यू और इम्तिहान के वक्त भी उपरोक्त कथन याद रखें। आप प्रकाशन कार्य, कानूनी कार्यक्षेत्र और शेयरबाज़ार में एमराल्ड पत्थर के प्रभाव से सफलता को अपनी और खींच पायेंगे। शिक्षा क्षेत्र में भी लाभ होगा।

पेशा

फलदीपिका के श्लोको के अनुसार दसवी भाव व्यापार, श्रेणी था पद, कर्म, जय - विजय, कीर्ति, त्याग, जीविका, आकाश, स्वभाव, गुण, अभिलाषा, चाल था गति और अधिकार को सूचित करता है ।

सरर्वात्त चिन्तामणि के अनुसार ज्योतिषियों को दसवी भाव से काम (उधोग) अधिकार, शक्ति, कीर्ति, वर्षा, विदेश राज्यों में जीवन, त्याग का मनोभाव, सम्मान, आदर, जीविका मार्ग, व्यवसाय या पेशा, को निर्णय करना चाहिए । आपके लिए सूचित किए गए ज्योतिष सम्बधित व्यावसाय और पेशा के अन्तर्दृष्टि को दसवी भाव, उसमें उपस्थित अधिपति, गृह, सूर्य और चन्द्र का स्थान आदि तत्वों के विश्लेषण के द्वारा प्रस्तुत किया गया है ।

आपके जन्मकुण्डली में दसवी भाव के स्वामी को ग्यारहवा भाव पर स्थान दिया गया है । ब्रिहत्त पारासरा होरा के श्लोक यह सूचित करता है कि आप धनिक और खुशा रहेगी । आपको एक आनन्दमय व्यक्तित्व है । आप विश्वसनीय और धर्मिक होगें ।

दसवी भाव कर्क राशी है । यह एक जलमय चिनह् है । इसलिए पानी और अन्य द्रावको से सम्बधित उघोग आपके लिए उचित है । आपके लिए सूचित किए गए अन्य उघोग क्षेत्र है होटल. परिचरण, प्राचीन कला, अध्यापन प्रवचन, प्रकाशन, दूध से उत्पन्न पदार्थ आदि । आपको समाजिक जीवन की और कल्पना शील की और झुकाव होगा । जल वितरण, आयात - निर्यात, नौका, भूमि था नहर खोदना, तैरने का तालाब, जल निकास, घातु, और लघु पानीय आदि चीजों से सम्बधित उघोग क्षेत्र में आप सफलता पा सकते है ।

आपकी जन्मकुण्डली में चन्द्र से लेकर शुक्र गृह दसवी भाव में उपस्थित है । क्योंकि शुक्र दसवी भाव में उपस्थित है आप भाग्यशाली होगी । आपको स्वच्छ स्वभाव और व्यवहार होगी । आप नहाने, प्रार्थना करने और ध्यान में स्थिर रहेगी । आपको अपने जीवन साथी और बच्चों से अतीव स्नेह प्राप्त होग । आप किसी सांस्कारिक या कलात्मक संस्था की कर्मचारी बनेगी । आपकी जीविक भी इसी तरह की कर्यों से सम्बधित होगी । आप कला और संस्कार की वाणिज्य में तत्पर होगी और आप पर्यटन विभाग में काम करेगी या प्राचीन कला से सम्बधित होगी । आप ऐसी चीजों को निर्यात भी कर सकती है । शुक्र एक स्त्री गृह बै । यह सूचित करता है कि आप एक स्त्री शाक्ति से सम्बधित होगी । अमूल्य रत्नो, गहने और वाहनो को शुक्र नियंत्रित करती है । आप इन चीजों से सम्बधित क्षेत्रों में सफल हो सकती है । शुक्र नियम और न्यायाधीरा से मिली जुली है । आप कर कर्मचारी भी बन सकती है ।

शुक्र ऋषभ राशी में उपस्थित है । आप अपने छोडे व्यापार में खुश होगा । आप अपने व्यापार विस्तार में जल्दी नहीं है । आप व्यापार मे हो या किसी ओर पेशा में अपने नीचे काम करने वाले कर्मचारी को खुश रखेगे ।

मंगल गृह चन्द्र से लेकर दसवी भाव में उपस्थित है । यह आपको बुद्विशाली और उत्सुक बनाएगा । अपने उधोग में ओज और उत्साह प्रकट करेगा । मंगल गृह इंजीनियरिगं और शास्त्र विज्ञान को नियंत्रित करता है और आप इन क्षेत्रों से सम्बधित उधोग में सफल होगा ।आप अपने पेशा या उधोग में समर्पित होगी ।आपको कुछ शक्तिशालि लोगों के लिए काम करने की मौका मिलेगा। दसवी भाव में उपस्थित मंगल गृह यह सूचित करता है कि आप फौजी जीवन में सफल होगा । आप खेती या आग से सम्बधित उधोगों को भी अपना सकते है ।

वषृराशी में उपस्थित मंगल गृह भूमि से सम्बधित चीजों जैसे खेती, बागबनी, अचलसंम्पति आदि आपके लिए उचित है ।

जन्मकुण्डली में उपस्थित गृहों के स्थानों के आदार पर प्रस्तुत किए गए विश्लेषण के अलावा कुछ साधारण विधि नीतियाँ भी जन्म नक्षत्र से प्राप्त कर सकते है । आपके जन्म नक्षत्र से सम्बधित उधोग क्षेत्र निम्नलिखित है ।

कारखानों में प्रबन्धक का पद, रसायनिक इंजीनियरिंग, रसायनिक उत्पनों का व्यापार, वकील, प्रतिरक्षा विभाग, सर्जन, राजत्यन्तर स्वास्थ्य

सेवाएँ, गहने, बिजली द्वारा चाँन्दी सोना आदि चढ़ाना ।

आपके जन्मकुण्डली में सूर्य उच्च स्थान पर खड़ा है । सफलता आपके लिए निश्चित है ।

आमदनी

ग्यारहवी भाव आमदनी और आमदनी के मार्गें को सूचित करता है ।

ग्यारहवें भावाधिपति के सातवें स्थान पर रहने से विवाह के बाद अनेक प्रकार की प्रगति की संभावना है। जीवनसाथी की अभिरुचि की ओर ज़्यादा झुकने के आदि हैं। स्वभाव से आप एक श्रेष्ठ और उदार व्यक्ति हैं। विवाह के बाद आर्थिक उन्नति विशेष रूप से होगी।

चन्द्र ग्यारहवें स्थान पर रहा है। आपको विश्वासपात्र मित्र प्राप्त होंगे। सट्टेबाज़ारी और खेल कूद के क्षेत्र में आप निपुण होंगे। धन प्राप्त होगा और जीवन सुखमय रहेगा।

केतु ग्यारहवें स्थान पर रहा है। आपके निर्मल जीवन और श्रेष्ठ बुद्धि के लिए केतु कारण कर्ता बनेगा।

ग्यारहवी देव केन्द्र स्थान पर है । आप धन और संम्पति पा सकते है ।

खर्च , व्यय, नष्ट

बारहवी भाव खर्च और नष्ट के बारे में सूचना देते है

बारहवाँ भावाधिपति सातवें स्थान पर रहने से जीवनसाथी के लिए या उसके कारण धन खर्च होगा। स्वास्थ्य में अभाव महसूस होगा। सुख की मात्रा कम रहेगी। विद्या प्राप्ति में बाधायें मार्ग अवरुद्ध करेगी। अन्ततः सफलता प्राप्त होगी।

भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार मानव जीवन को भिन्न दशाओं में विभाजित किया गया है। ग्रहों के स्थान और स्थिति के अनुसार योग और योगों की शक्ति के अनुसार दशा-फल होता है। सत्ताईस नक्षत्रों को तीन तीन के समूह में बांट कर नौ दशाओं में विभाजित किया गया है। इनके अधिकार के समय को दशा कहते हैं। बच्चों के जो अप्रायोगिक फल होते हैं वे माँ-बाप को बाधक होते है। उसी तरह पति-पत्नी के बारे में भी फल का निर्णय करना है। तालिका देखकर दशाओं का आरंभ और अंत समझ लेना है। सप्तवर्गों के आधार पर ग्रहों का बलाबल निश्चित किया गया है।

मंगल दशा

इस दशा में बहुत सा धन कमाया जाएगा। कठिन परिश्रम भी करना पड़ेगा। पशु पक्षियों से बड़ा लाभ होगा। बच्चों या भाइयों से झगड़े हो सकते हैं। दुराचारी औरतों के संपर्क में रहने की संभावना है। फिज़ूल खर्च होनेवाला है। आग से नुकसान न होने के लिए ध्यान देना होगा। शरीर में थकावट और पीलापन होने की संभावना है। स्वास्थ्य का बराबर परीक्षण कराना अथवा आवश्यक दवाएँ लेना उचित रहेगा। सामान्यतः यह दशा सुखमय रहेगी और आपकी आशाओं की पूर्ति करेगी। धन संपादन कार्य में अभिरुचि रहेगी। पिता और गुरुजन के प्रति अभद्र व्यवहार करने की संभावना है। मलिन और हीन वृत्ति के लोगों से मिलना जुलना पड़ेगा। व्यर्थ के धन खर्च से बचना उचित होगा। अग्नि और दुर्घटना से बचते रहना होगा। कुज की दशा में पुरुष अति उन्नति प्राप्त कर सकता है। पत्नी और पुत्र के साथ झगड़ा हो सकता है। अकारण क्रोधित होने की संभावना है। सामान्य सर्जरी की आवश्यकता पड़ सकती है।

मंगल जन्म कुण्डली में बलवंत रहता है तब अनुकूल स्थिति पैदा होती है और जातक अनेक शुभ फल प्राप्त करता है। राज्य-भूमि, धन और वाहनादि की प्राप्ति सरलता से हो सकती है। मित्र व बन्धुओं का सहयोग मिलेगा।

भाई और उच्चधिकारियों से बहुत सहायता प्राप्त होगी। अन्य लोगों से भी सहयोग और सुविधाएँ प्राप्त होगी। यह दशा काल बहुत लाभदायक होगा। अधिकारियों का अनुमोदन प्राप्त होगा। सेना, पुलिस या इसी प्रकार के अनुशासित विभागों से संपर्क हो सकता है। इस दशा में आपकी पदोन्नति होगी। ज़मीन, सोना ताम्बा, आभूषण आदि मिलेंगे। दक्षिण की ओर यात्रा करने और लाभान्वित होने की संभावना है। स्वस्थ शरीर और स्वच्छता में विश्वास रहेगा। अपनी दृढ़ता से अपना जीवन धन्य होगा। नये मकान के निर्माण कार्य में अभिरुचि जागेगी। हर विपत्ति का सामना करने में आप समर्थ हैं।

∇ (9-08-2007 >> 27-08-2008)

मंगल दशा में राहू की अन्तर्दशा में अविचारित व्यक्तियों से धोखा होने की संभावना है। चूल्हे, बिजली या सवारियों से दुर्घटनाएँ हो सकती है। इस समय खतरे की संभावना है। इस काल में होनेवाले खतरों से जाग्रत रहने की आवश्यकता है। समय समय पर विशेषज्ञों से परामर्श उपयोगमय बनेगा। जागृति से काम करें तो आपत्तियाँ और हानियाँ कम होगी। मारक आयुध और विस्फोटक वस्तुओं से दूर रहें। रोग के लक्षण प्रकट होते ही डाक्टरी सलाह अनिवार्य है।

∇ (27-08-2008 >> 3-08-2009)

मंगल दशा में बृहस्पति के अपहार में आपका मन दृढ़ रहेगा और सभी कार्य उत्साह से किए जाएँगे। आनन्दपूर्ण चिंतन से मन उल्लासित रहेगा। आप तीर्थ स्थानों की यात्रा करेंगे। इस समय अनेक पण्डितों से परिचित होना पड़ेगा। आर्थिक उन्नति होनेवाली है। कर-विभाग से कोई समस्या खड़ी हो सकती है। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे।

∇ (3-08-2009 >> 12-09-2010)

मंगल दशा में शनि के अपहार में चिंतन का नियन्त्रण करना मुश्किल है। मन में तरह तरह के विचार आते रहेंगे। पहले जैसे कोई काम करने में धैर्य नहीं रहेगा। व्यर्थ का भय उत्पन्न होगा। व्यर्थ की उत्कण्ठा से मन उद्वेगपूर्ण रहेगा। हर जगह खतरे की आशंका उत्पन्न होगी।

मन शंका-कुशंका के कारण अस्थिर रहेगा। ईश्वर पर भरोसा रखना ही एक मात्र श्रेष्ठ मार्ग हैं। इस दशा के बाद तकलीफें कम होगी।

∇ (12-09-2010 >> 9-09-2011)

मंगल दशा में बुध के अपहार में दुष्टों का त्रास सहना पड़ेगा। अधर्मी और नीच प्रवृत्ति के लोग आप के विरुद्ध क्रियाशील रहेंगे। अचरज की बात होगी कि आप उन सब पर विजय पाएँगे। अदृश्य आध्यात्मिक शक्ति आप की सहायता करेगी। अपना निवासस्थान अधिक सुविधा जनक बनाया जायेगा। नये मकान के निर्माण की भी संभावना है।

∇ (9-09-2011 >> 5-02-2012)

मंगल दशा में केतु की अन्तर्दशा में आपको बिजली से संचालित उपकरणों से खतरा पैदा हो सकता है। नित्य उपयोग में लिए जानेवाले बिजली के उपकरणों की जाँच करवाना लाभदायक होगा। उदर रोग से पीड़ित होने की संभावना रखते हैं। भोजन में नियन्त्रण लाना अनिवार्य होगा। कृमि विकार संभव है।

∇ (5-02-2012 >> 6-04-2013)

मंगल दशा में शुक्र की अन्तर्दशा आपको अनियन्त्रित रखेगी। आप जल्दी से अकारण नाराज़ हो जाएँगे। परिवार से अलग रहना पड़ेगा। मारक आयुध से दूर रहें। कौटुँबिक वातावरण अच्छा रहेगा। अपने कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। किसी के वियोग की संभावना है। विपरीत लिंग का परिचय बद्नामी कारक हो सकता है।

∇ (6-04-2013 >> 12-08-2013)

मंगल दशा में सूर्य के अपहार में आपकी प्रतिष्ठा और अधिकार में वृद्धि होगी। आप को अधिकार और वारीसी में संपत्ति की उपलब्धि होगी। यह आप के लिए जनसम्मति एंव मान्यता का समय है। फिर भी स्वजनों से शत्रुता का अनुभव होगा। राजकार्य में सफलता प्राप्त करना सरल होगी।

∇ (12-08-2013 >> 13-03-2014)

मंगल दशा में चन्द्र का अपहार आपको सहज सफ़लता प्राप्त करवायेगा। कई तरह के लाभ भी प्राप्त होंगे। प्रगति होगी। जो आपके विरोधी थे वे आपके दोस्त बन जायेंगे। आप से दूर भागनेवाले आप के निकट आयेंगे। अप्रतिक्षित दिशाओं से अनेक प्रकार की सहायता प्राप्त होगी। उच्च अधिकारियों और बडों से मान्यता प्राप्त होगी। इस काल में संतोष और सौभाग्य दोनों का साथ बना रहेगा। घर में मांगलिक कार्यों का आयोजन होगा।

राहु दशा

राहु जुआ और कल्पनाओं का देवता है। इस दशा काल में व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन और बुराइयाँ आ सकती है। परिवार के लोग और साथी लोग आपको शंका की दृष्टि से देखेंगे। इस काल में किसीसे झगड़ा न हो इसकी ओर ध्यान देना है। रोगों से पीड़ा होने की संभावना है। विषबाधा से बचने की कोशिश करनी है। विरोधियों से आपको सामना करना होगा। रिश्तेदार भी विरोधी बनने की संभावना रखते हैं। उच्च अधिकारियों का अनुग्रह कम होगा। गले में दर्द और आँखों के रोग होने की संभावना है। ई.एन.टी डाक्टर के उपदेश के अनुसार रोग होने से पहले ही उपचार करना अच्छा होगा। राहु सब के लिए एक सा नहीं होता। अच्छे स्थान पर हो तो सन्तान सुख, समृद्धि और सब प्रकार के ऐश्वर्य देनेवाला होता है। चर्म रोग से पीड़ा अनुभव होगी। विवाहित होने पर पत्नी और संतान का कुछ दुख सहना होगा। राहुदशा जब बालावस्था काल में आती हैं तो अभ्यास क्षेत्र में विक्षेप अनुभव होता है। दांत की पीड़ा हो सकती है। ज़हरीली वस्तुओं से बचना आवश्यक है। सचेत रहना होगा। शत्रुओं के आक्रमण से सजग रहना होगा। बड़ों से मिलते सहयोग में क्षति होगी। इस काल में भक्तिपूर्ण जीवन शाँति प्रदान करता है। धन की अल्पता मानसिक सुख की कमी, असंतोष की अधिकता, शत्रु से विवाद और अत्यधिक आपसी आदि फल प्राप्त होंगे।

गृह योग स्थिति के अनुसार राहु अनुकूल दशा उत्पन्न करने वाला है। अनेक शुभ फल सरलता से प्राप्त होंगे।

राहु अच्छे स्थान में रहने से आपको शुभ फल प्राप्त होगा। धोखेबाज़ी और अयोग्य उपाय से आपका बल बढ़ेगा, पदोन्नति होगी और अधिकार प्राप्त होगा। अनुचित कामों से आपका संबन्ध का दायरा बढ़ेगा। कर न देकर सरकार को धोखा दिया जाना संभव होगा। औरतों की संगति में रहकर आनन्द उठाकर उनसे संपत्ति प्राप्त की जायेगी। आवास स्थान बदलने की संभावना है। राहु आपको धनवान बना देगा। अयोग्य कार्यों से ख्याति प्राप्त होगी।

∇ (13-03-2014 >> 23-11-2016)

राहू दशा में राहु की अन्तर्दशा में आपका समय अच्छा नहीं होगा। परिवार में किसी भी तरह का वियोग हो सकता है। दुःखी होना पड़ेगा। आपको निराशा और दुःख स्वयं नियन्त्रित करना होगा। आपके संबन्धियों को भी सुख एवं दुःख दोनों के मिश्रणयुक्त फल की प्राप्ति होगी। विदेशागमन की प्रतीक्षा रखने में निराशा का अनुभव हो सकता है। इच्छानुसार सुख का अभाव हो सकता है।

∇ (23-11-2016 >> 19-04-2019)

राहू दशा में बृहस्पति के अपहार में आपकी तन्दुरुस्ती अच्छी रहेगी। सरकारी सेवक आपके साथ अच्छा व्यवहार करेंगे। उच्चधिकारियों से अच्छा व्यवहार प्राप्त हो सकता है। आपको विवाह आदि मंगल कार्यों में भाग लेने का अवसर प्राप्त होगा। आर्थिक उन्नति निश्चित होगी। नये सदस्य परिवार में आयेंगे या नये बालक का जन्म हो सकता है।

∇ (19-04-2019 >> 23-02-2022)

राहू दशा में शनिचर के अपहार में शारीरिक निर्बलता का अनुभव होगा। पित्त के प्रकोप की संभावना है और उसके कारण स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। किसी प्रधान कारण के बिना अपने प्रियजनों और मित्रों के बीच झगड़ा उत्पन्न होगा। दूर देश की यात्रा के माध्यम से अथवा स्वनिवास स्थान के निमित्त दुःख सहना होगा।

∇ (23-02-2022 >> 11-09-2024)

राहू दशा में बुध के अपहार से नए संबन्ध स्थापित होंगे। आपको कई नये मित्र प्राप्त होंगे। मित्र बहुमानित होंगे और चारों ओर से सन्मान प्राप्त होगा। आपको अविचारित रूप में धन का लाभ होगा। आप चिंतन और मन के कार्य में क्रियाशील रहेंगे।

∇ (11-09-2024 >> 30-09-2025)

राहू की दशा में केतु के अन्तर में ज्वर से पीड़ित होना पड़ेगा। अप्रतिक्षित घटनाओं का शिकार बनना होगा। दुर्घटनाएँ होने की संभावना है। शरीर की गर्मी बढ़ती रहेगी। विस्फोटक वस्तु धारदार औजार से दूर रहना योग्य होगा। बिजली के किसी उपकरण के इस्तेमाल करते समय बड़ा ध्यान देना है।

∇ (30-09-2025 >> 29-09-2028)

राहू दशा में शुक्र के अपहार में आप के साथियों या मित्रों के लिए समय कठिन रहेगा। आत्मसंयम आपके लिए अनिवार्य बनेगा। छोटी छोटी बातों को लेकर मतभेद उत्पन्न होगा। छोटी बातों को बड़ा स्वरूप देने की संभावना है। इस समय में विवाह संबन्ध स्थापित करने का योग है। नवीन मकान की प्राप्ति या मकान का नवीनीकरण होगा।

∇ (29-09-2028 >> 24-08-2029)

राहू की दशा में सूर्य के अपहार में कुछ न कुछ विकार होता ही रहेगा। रोग के लक्षण प्रकट होते ही आपको विशिष्ट डाक्टर की सलाह लेना योग्य होगी। कर-विभाग या वन-विभाग के अफसरों से आपको असुविधायें सहनी होगी। बार बार उनसे छान-बीन होगी। अन्त में आप निर्दोष माने जायेंगे।

∇ (24-08-2029 >> 23-02-2031)

राहू की दशा में चन्द्र के अपहार में आप पारिवारिक सुख का ठीक अनुमोदन कर सकेंगे। फिर भी छोटे-मोटे कारण से कलुषित वातावरण का सामना भी करना होगा। कुछ समय के लिए इन झंझटों से दूर एकान्त में रहना अच्छा है। बच्चों से परेशानी होगी।

∇ (23-02-2031 >> 12-03-2032)

राहू की दशा में मंगल के अपहार में नीच वृत्ति के लोग आप के विरुद्ध अहित कार्य कर सकते हैं। उनसे बचते रहना अनिवार्य होगा। सत्य आपके पक्ष में होने से आपको परेशान होने की आवश्यकता नहीं है। आग और शस्त्र से सुरक्षित रहने के लिए ध्यान देना आवश्यक है। आग से जलने की संभावना है। प्रार्थना तथा ध्यान आपको शान्ति प्रदान करेगा। ईश्वरभक्ति का सहारा योग्य है।

12-03-2032 से प्रारंभ होता है

गुरु दशा

इस दशा में परिवार के सदस्यों, साथियों और अन्य लोगों की सहायता प्राप्त होती है। उनकी सहायता से आपकी बड़ी उन्नति होगी। परिवार के बड़े या ऊपर के अधिकारियों का अनुकूल भाव बना रहेगा। बच्चों तथा मित्रों का स्नेह और प्यार आपको मिलेगा। इष्ट जनों से अलग रहना पड़ेगा। ई.एन.टी से संबन्धित रोग के लक्षण प्रकट होते ही डाक्टर से संपर्क करना उचित होगा। कानों में कोई न कोई रोग होने की संभावना है। जीवन में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त होगा। सफलता की चोटी पर पहुँचेंगे। अविवाहित लोगों के लिए विवाह के लिए और संतान प्राप्ति के लिए यह उचित समय माना जाता है। कोई सरकारी कार्य आपके हाथों में सौंपा जायेगा। सफलता और कीर्ति आपके पाँव चूमेगी। उच्च अधिकारियों से और बड़ों से प्रशंसा प्राप्त होगी। वे आपके कार्य से संतुष्ट होंगे। मित्रजनों से आनंद मिलेगा। यह सुख होते हुए भी कुछ मित्रों से बिछड़ना पड़ सकता है। गुरुदशा का आरंभकाल कष्टमय और अंतिम काल सुखद हो सकता है।

गुरु बलवंत रहने से अनेक शुभ फल की प्राप्ति होगी। राज्यलाभ, ज्ञान वृद्धि,, व्यवसाय वृद्धि और पारिवारिक सुखों में वृद्धि होगी।

इस दशाकाल में शिक्षा या ज्ञान पाने की बड़ी इच्छा होगी। अपना पूरा समय इस में लगाकर स्कूल में या कालेज या समाज में प्रसिद्ध बनने का अच्छा मौका है। इस दशा के उत्तरार्द्ध में सन्तान सुख और संपत्तिसुख प्राप्त होगा। आपका जीवन सुखमय रहेगा। किसी तीर्थयात्रा में या धार्मिक त्योहार में भाग लेना संभव है। पीले रंग की वस्तुएँ जैसे की सोना, पीतल आदि भाग्य सूचक हैं। विवेक और गंभीरता में वृद्धि होगी। बड़प्पन प्राप्त होगा।

नक्षत्र परिहार

क्योंकि आपने मगह नक्षत्र में जन्म लिया है आपका नक्षत्र अधिपति केतु है । आप जीवन में हमेशा स्वाभिमानी होगों । यह आपके प्रयोगिक जीवन में उच्च स्थान तक पहुँचने के लिए रुकावट बन जाएगा ।
जन्म नक्षत्र के आधार पर कुछ गृहों का दाश आपके लिए प्रतिकूल है । मंगल नक्षत्र होने के बावजूद सूर्य, मंगल और गुरु दाश में आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा ।

इस समय आपके विचार में अनेक प्रकार का प्रत्यक्ष परिवर्तन दिखाई पड़ेगा । ऐसा परिस्थिति भी होगा जब आप दूसरों से आज्ञाकारी बनने के लिए मज़बूर हो जाएगो । वैवाहिक जीवन में विश्वसनीय रहना होगा । अपने आर्थिक व्यवस्था को ध्यान में रखकर ही दूसरों को सहायता का वादा देना चाहिए । इस समय हर सुख विलास में अधिक दिलचस्पी होगा ।

सिंह जन्म राशी का अधिपति सूर्य है । जीवन में ऐसा परिस्थिति भी होगा, जब आपको अपने उत्सुकता और धैर्य प्रदार्शित करना पड़ेगा । हमारा विचार और कार्य दूसरो पर कैसे प्रभावित हो रहा इस पर विचार करना अच्छा होगा । उत्तर फालगुनी. चित्रा, विशाखा, पूर्व भद्रपाठा नक्षत्र सामान्य रुप से अनुकूल नहीं होगा ।

इस प्रतिकूल दाश में अपने वाक्य और व्यवहार पर नियंत्रण करना चाहिए, मुख्यतः विरुद्व नक्षत्रों पर । अनावश्यक झगड़ो से दूर रहने की कोशिश करें । इस समय दूसरों के मामलों में दखल देने से दूर रहे ।

लौकिक प्रतिविधिक मर्यादों की प्रवर्तन करने से प्रतिकूल प्रभाव को शान्त कर सकते है ।

प्रतिकूल दाश में गणेश भागवान -(जो रुकावटों को दुर करता है) से प्रार्थना करना लाभदायक है । मगह, अशविनी और मूल नक्षत्र के दिवस पर मंदिर में दर्शन करना शुभ माना जाता है। वह दिन जब मगह नक्षत्र और रविवार साथ आता है, विशिष्ट महत्व से उपवास रखना अच्छा होगा ।

फल सिद्वि के लिए रोज नक्षत्र का अधिपति केतु की पूजा करना चाहिए । लाल रंग के वस्त्रों को पहनने से आप केतु को प्रसन्न कर सकते है ।

इसके अलावा सूर्य को प्रसन्न करने के लिए अनुष्ठानों का पालन करना लाभदायक है ।

मगह नक्षत्र का देव पूर्वज है । पूर्वजों को प्रसन्न करने के लिए और अच्छे परिणाम के लिए इनमें से किसी मंत्र को विश्वास से अलापन करना चाहिए।

१ ऊ पित्रभ्याह स्वधायिभ्यः स्वदा नमः
पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वदा नमः
प्रपिता महेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वदा नमः
अक्क्षन्न पितरोमीमदान्ते पितरो तीतृपन्त
पितरः पितरः सुन्दध्वाम्

२ ऊ पितृभ्यो नमः

कर्क माँस में बलि और धार्मिक अनुष्ठानों को कारना चाहिए । इसके अलावा, जानवरों,पक्षियों और पेड़ो का संरक्षण करना शुभकारक है । मुख्यतः मगह नक्षत्र का जानवर चूहा का संरक्षण करना और उसके साथ हीन व्यवहार न करने से आपके जीवन में ऐश्वर्य और समृद्वि

प्राप्त होगा ।मगह का औधोगिक पेड, बरगड पेड और उसके शाखओं को काटना नहीं चाहिए और औधोगिक पक्षी , चकोर पक्षी को पीड़ा नहीं देना चाहिए । मगह नक्षत्र का मूलतत्व जल है । जल देव की पूजा करना चाहिए और देवों की अनुग्रह प्राप्त करने के लिए जल को दूषित करने वाले कार्यों से दूर रहना चाहिए ।

दाश परिहार

दश के हानिकारक प्रभावो का परिहार

हर गृह के दाश में भाग्य और निर्माग के सामान्य झुकाव जन्मकुण्डली में उपस्थित गृहों के स्थानों पर आधारित है । गुणकारक और हानिकारक गृहों का प्रभाव यह सूचित करता है कि कुछ दाश समय आपके लिए अनुकूल नही है । प्रतिकूल दाश समय के हानिकारक प्रभावों को कम करने के लिए आपको कुछ धार्मिक विधियों का आचरण करना पडेगा ।

जन्मकुण्डली में उपस्थित प्रतिकूल दाश समय और उसके लिए किए जाने वाले धार्मिक विधियों के बारे में यहाँ प्रस्तुत किया गया है ।

दशा :मंगल

अभी आप मंगल दाश से गुजर रहे है ।

आपका जन्म नक्षत्र मघा है । प्ब्ह्ब्ण मंगल भाव में है । इसलिए इस दाश में अक्सर आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा ।

जन्मकुण्डली में इस गृह स्थान के आधार पर मंगल दाश में आपको प्रतिकूल स्थितियों से गुजरना पडेगा । इस समय सफलता पाने के लिए आपको अप्रत्याशित मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा । छोटे काम के लिए भी आपको दूसरों पर निर्भर होना पडेगा । अपने उत्साह और ओज को बनाए रखने के लिए प्रत्येक ध्यान रखना चाहिए ।

मंगल दाश के हानिकारक प्रभावो की तीव्रता बुध के स्थान परिवर्तन पर बदलता रहता है । जब बुध प्रतिकूल स्थान पर है जो मुसीबतों का सामना करना पडेगो उसके बारे में यहाँ कहा गया है ।

जब मंगल कमोज है आपके काम के कुछ बदलाव होगा । इसलिए आपके विशिष्ट योग्यताओं को बनाए रखने केलिए प्रत्येक ध्यान रखना चाहिए ।

इस समय जानबुझकर या आनजाने में अपवाद में शामिल हो जाएगो । आपको अपने जीवन रीति पर संयम रखना चाहिए । दूसरे लिंग के लोगें से मिलते जुलते समय प्रत्येक ध्यान रखना चाहिए ।

इस समय दोस्तों को सभालते वक्त आपको उसके खिलाफ नहीं होना चाहिए । प्रतिकूल परिस्थिति में अपने क्रोध को नियंत्रित करना आपके लिए मुशकिल पड जाएगा । दूसरों के मामले में दखल देना के अभिरुचि आपको होगा । इसी कारण आप अनावश्यक मुसीबतों में पड़ जाएगा ।.

मंगल को कलह का उत्तरदायित्व माना जाता है । इसलिए जब मंगल प्रतिकूल स्थान पर है तो छोटे - छोटे वाद विवाद और बहस बडा तर्कविषय बन सकता है । इसलिए प्रतिकूल परिस्थियों से दूर रहे ओर अपने वाक्य और व्यवहार पर नियंत्रण रखे । किसी बातचीत में शमिल होते समय अपने विरोधियों से आदर का भाव रखना चाहिए ।

इस समय अनेक रोगों का सामना करना पडेगा । वातावरण में होने वाले परिवर्तन आपके स्वास्थय पर प्रभावित होगा ।

अगर आप इस प्रकार के मुसीबतों का सामना कर रहे है तो यह समझना चाहिए कि मंगल दाश प्रतिकूल स्थान पर उपस्थित है । जो लोग

इस प्रकार के मुसिबतों को मेहसूस कर रहा है तो उन्हें मंगल को शान्त कराने के लिए कुछ मार्ग अपनाना चाहिए । सूर्य को शान्त रखने पर आपके ऊपर जो हानिकारक प्रभाव है, उसको कम कर सकते है और जीवन सुख से बरा होगा ।

इस जन्मकुण्डली के विस्तृत निरीक्षण के आधार पर मंगल दाश में जो विशिष्ट आज्ञाओं का पालन करना चाहिए उसके बारे में यहाँ प्रस्तुत किया गया है ।

वस्त्र

मंगल एक लाल गृह है । लाल रंग मंगल गृह का प्रिय रंग है । मंगल गृह को शान्त करोन के लिए आपको मंगलवार में लाल रंग का वस्त्र पहनना चाहिए । इसी प्रकार का रंग,रेशमी कपड़ा पहनना लाभदायक है ।

प्रातकालीन प्रार्थना

प्रातकालीन प्रार्थना हानिकारक प्रभावों को दूर करने के साथ - साथ आपके मन औप शरीर को नयी शक्ति प्रधान करता है । चन्द्र दाश में हमेशा सूर्यंदय से पहले उठना चाहिए । अपने शरीर को शुद्व करने के बाद मंगल की अनुग्रह की याचना करें । मन से सभी चिन्तओं और विचारों को दूर करने का विशिष्ट ध्यान रखना चाहिए ।

सूर्याय शीतरुचये धरणीसुताय
सौम्याय देवगुरवे बृगुनन्दनाय
सूर्यात्मजाय भुजगाय च केतवे च
नित्यमं नमो भगवते गुरवे वराय
सौख्यदायिन् महादेव लोकनाथ महामते
आदित्यानिष्टजान् सर्वान् दोषानेत्यान्यपाकुरु(इस प्रार्थना का आलपन करे) इसके बाद
देव देव जगन्नाथ देवता नामपीश्वर
भूपुत्रानिष्टसंभुतम् दोषजातम् विनाशये

इस प्रार्थना को हर दिन नीदं से उठते ही शाथ्या में पुरब की दिशा में बैठकर आलापन करना चाहिए ।

उपवास

उपवास खाध्य पदार्थ के उपयोग के किफायत करने की आचरण को सूचित करता है । इसके अलावा उपवास रखना और अनुष्ठानों का पालन करने का मुख्य लक्ष्य है पने मन और शरीर को शुद्व करना ।अपने लिए विशिष्ट दिनों में और गृहों के अनुरुप दिनों में उपवास रखना चाहिए ।

मंगलगृह को शान्त करने के लिए आपको मंगलवार में वृत्त रखना चाहिए । इस समय सुभ्रमणन्य क्षेत्र में था कोई देवी की दर्शन करना चाहिए । अपने योग्यता के अनुसार दान देना चाहिए । मकर राशि के समय लाल रंग के फूले से अगांरका पूजा करना उचित है । उपवास लेते समय शाम के बाद नमकीन खाध्य पदार्थ को टालना चाहिए । उपवास केसमय मदिरा, माँस पदार्थ और मदोन्मत करने वाले चीजों का उपयोग नहीं करना चाहिए । इन दिनों में प्राकृतिक खाध्य पदार्थ जैसे फल, सब्जी और हरे पत्ते जो पचाने के लिए सहायक है उपयोग करना चाहिए । अजान सम्बधी चीजें, तेलहा गरम और खट्ट खाध्य पदार्थ को रोकना चाहिए । आप अंशातः या पूरी तरह हानिकारक प्रभावों के तीव्रता के अनुसार उपवास रख सकते है । धूमधाम और विलास में आसक्त होना उचित नहीं है । आपका उपवास तभी सफल होगा जब आप अपने आवेग और वाक्यशैली पर समय रखे ।

दान

अच्छे मन से भिक्षा या दान देना अपने पाप परिहार का ललित मार्ग है ।
मंगल गृह को शान्त करने के लिए लाल रंग का पुरुप जानवर, लाल वस्त्र, सोना, ताँबा या ताबाँ से बनी मुर्ति दान देना लाभदायक है ।

पूजा

मंगल को शान्त करने के लिए कुछ पूजा विधियों को विर्देश किया है ।-आपको शिववन्ती, जपाकुसुम आदि फूलों से मंगल गृह का पूजा करना चाहिए । मंगल पूजा एक विशिष्टपूजा है जो अच्छे परिणामें को उत्पन्न करता है । नव गृहों के मंदिर में दर्शन करना,चम्पा फूल से

मंगल गृह की पूजा करना और चम्पा फूल की माला से मंगल गृह को आभूषित करना लाभदायक है ।निपुण ज्योजिषियों के उपदेश के अनुसार ही यह पूजा विधि का पालन करना चाहिए । इस पूजा को तब करना अत्थधिक उचित है जब मंगल मकर राशी में हो ।

मन्त्रों का आलापन

जिन लोगों को धार्मिक अनुष्ठानों और परिहारों का पालन करने में पारिभाषिक मुसीबत है, वे प्रार्थना के द्वारा मंगल का अनुग्रह और कृपा जीत सकते है ।

ॐ भुमिपुत्राय विद्‌महे
लोहितांगाय धीमहि
तन : भौम : प्रचोदयात्‌

अत्यन्त विश्वास और भक्ति से इन मंत्रों का आलापन करने पर ही आपको फल सिद्दि प्राप्त होगा ।

मंगल को प्रसन्न करने के लिए मंगल के विविध नाम से सम्मिलित किए गए मन्त्र का आलापन करना चाहिए । मन्त्र इस प्रकार है

ॐ महीसुताय नम :
ॐ महाभागाय नम :
ॐ मंगलाय नम :
ॐ मंगलप्रदाय नम :
ॐ महावीराय नम :
ॐ महाशूराय नम :
ॐ महाबलपराक्रमाय नम :
ॐ महारौद्राय
ॐ महाभद्राय नम :
ॐ माननीयाय नम :
ॐ दयाकराय नम :
ॐ मानदाय नम :

अंगुलिक यंत्र

अगुंलिक यंत्र गृहों को प्रसन्न करने का दुसरा उपाय है । मंगल को प्रसन्न करने के लिए स्तुतिपूर्वक अगुंलिक यत्र नीचे प्रस्तुत किया गया है-

८	३	१०
९	७	५
४	११	६

इस आविष्कार को विशुद्व मन से पहनने पर हानिकारक प्रभावों का दूर कर सकते है और आपके मन को एक नई शक्ति प्रधान करता है । यदि आप अपने क्षेत्र में सफल होना चाहचे है तो इस यंत्र एक कागज के टुकडे में अंकित करके अपने कार्य क्षेत्र, वाहन या टेबुल पर रखना चाहिए ।

ऊपर दिए गए परिहारा को 13-03-2014 तक आचारण करना चाहिए ।

दशा :राहु

आपका राहु दाश 13-03-2014 को शुरु होता है ।

प्ड्ढ्‌ठ्ठ्‌ब्ण राहु भाव में है । इसलिए इस दाश में अक्सर आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा ।

इस जन्मकुण्डली में उपस्थित गृह स्थान के अनुसार, राहु दाश में प्रतिकूल परिस्थितियों से गुजरना पड़ेगा । आप चिन्ता और डर से पीडित होगों । अप्रायोगिक कल्पना से आपके जीवन शैलि में परिवर्तन होगा ।

राहु दाश के हानिकारक प्रभावो की तीव्रता बुध के स्थान परिवर्तन पर बदलता रहता है । जब राहु प्रतिकूल स्थान पर है जो मुसीबतों का सामना करना पडेगो उसके बारे में यहाँ कहा गया है ।

जब राहु कमज़ोर है आप मदोन्मत करने वाले वस्तुओं से आकर्षित होगें । अपने योग्यता के उपयोग करने का अवसर कम हो जाएगा ।

क्योंकि आप इस समय आपको विषैले चीजों की आक्रमण का सभावना है, खाते समय और यात्रा करते समय ध्यान रखना चाहिए । अक्सर आप अपने चिन्तक्षोभ को नियंत्रींत नहीं कर सकते । आप समय के मूल्य की उपेक्षा करते है ।

इस समय आपको कोई दोस्ता का सहारा नही होगा । आपको त्वचा रोग का अनुभव होगा । बोली मे आपकी शक्ति कम हो जाएगा ।

अगर आप इस प्रकार के मुसीबतों का सामना कर रहे है तो यह समझना चाहिए कि राहु प्रतिकूल स्थान पर उपस्थित है । जो लोग इस प्रकार के मुसिबतों को मेहसूस कर रहा है तो उन्हें राहु को शान्त कराने केलिए कुछ मार्ग अपनाना चाहिए । सूर्य को शान्त रखने पर आपके ऊपर जो हानिकारक प्रभाव है, उसको कम कर सकते है । और जीवन सुख से बरा होगा ।

इस जन्मकुण्डली में के विस्तृत निरीक्षण के आधार पर राहु दाश में जो विशिष्ट आज्ञाओं का पालन करना चाहिए उसके बारे में यहाँ प्रस्तुत किया गया है ।

वस्त्र

काला और तंम रंग का वस्त्र राहु के लिए प्रिय है । इसलिए राहु को शान्त कराने के लिए नागें की पूजा करते समय और मंदिर जाते समय काला वस्त्र पहनना चाहिए ।

जीवन रीति

राहु दाश में आपका जीवन राहु गृह के आवश्यकताओं को परिपूर्ण करना चाहिए । राहु दाश मुख्य रुप से विचार शक्ति और चेतना को प्रभावित करता है । इसलिए ऐसे क्रीडा से दूर रहना चाहिए जो आपके मानासिक स्थिरता को बैचैन करें । पृथक् होकर या दिवा स्वप्न को जीवन मे स्थान नहीं देना चाहिए और हमेशा किसी अच्छे काम में व्यवस्थ रहना चाहिए । जो लोग मदिरा अनैतिक कार्य और स्वापक औषधों को मानसिक विषमताओं के लिए संस्तुति करे उनसे दूर रहना चाहिए । ऐसे काम में शमिल रहना जो आपको आत्मविश्वास प्रधान करे और मानसिक रुप से असतुष्ट लोगें को दूर रखो,आपके लिए लाभदायक है । अगर आपके परिवार में कोई कावु (वह जगह जहाँ सर्प देव का पूजा किया जाता है) तो उसका संरक्षण करना चाहिए । अकालिक यात्रा और अस्वाभाविक भोजनों को दूर रखना चाहिए । आपने समय को शन्तिपूर्ण वातावरण में बितात की कोशिश करें ।

प्रातकालीन प्रार्थना

प्रातकालीन प्रार्थना हानिकारक प्रभावों को दूर करने के साथ - साथ आपके मन औप शरीर को नयी शक्ति प्रधान करता है । चन्द्र दाश में हमेशा सूर्यंदय से पहले उठना चाहिए । अपने शरीर को शुद्व करने के बाद राहु की अनुग्रह की याचना करें । मन से सभी चिन्तओं और विचारों को दूर करने का विशिष्ट ध्यान रखना चाहिए ।

सूर्याय शीतरुचयें धरणीसुताय
सौम्याय देवगुरवे बृगुनन्दनाय
सूर्यात्मजाय भुजगाय च केतवे च
नित्यमं नमो भगवते गुरवे वराय
सौख्यदायिन् महादेव लोकनाथ महामते
आदित्यानिष्टजान् सर्वान् दोषानेत्यान्यपाकुरु
नारायणो महादेवो दैत्यानामान्तकः प्रभुः
राहोरनिष्टसंभुतम् दोषजातम् निरस्यतु

इस प्रार्थना को हर दिन नीदं से उठते ही शाथ्या में पुरब की दिशा में बैठकर आलापन करना चाहिए ।

उपवास

उपवास खाध्य पदार्थ के उपयोग के किफायत करने की आचरण को सूचित करता है । इसके अलावा उपवास रखना और अनुष्ठानों का पालन करने का मुख्य लक्ष्य है अपने मन और शरीर को शुद्व करना । अपने लिए विशिष्ट दिनों में और गृहों के अनुरुप दिनों में उपवास रखना चाहिए । क्योंकि राहु के लिए कोई शासन करने वाला दिवस नहीं है अपने जन्म नक्षत्र के दिन पर नाग देव का पूजा करना और नाग राजा के मंदिर में दर्शन करना लाभदायक है । अर्द्रा, स्वाति और सदाभिषा नक्षत्र के दिन में और रविवार को उपवास रख सकते है ।

उपवास केसमय मदिरा, माँस पदार्थ और मदोन्मत करने वाले चीजों का उपयोग नहीं करना चाहिए । इन दिनों में प्राकृतिक खाध्य पदार्थ जैसे फल, सब्जी और हरे पत्ते जो पचाने के लिए सहायक है उपयोग करना चाहिए । अजान सम्बधी चीजें, तेलहा गरम और खट्ट खाध्य पदार्थ को रोकना चाहिए । आप अंशातः या पूरी तरह हानिकारक प्रभावों के तीव्रता के अनुसार उपवास रख सकते है । धूमधाम और विलास में आसक्त होना उचित नहीं है । आपका उपवास तभी सफल होगा जब आप अपने आवेग और वाक्यशैली पर समय रखे ।
ऊपर दिए गए परिहारा को 12-03-2032 तक आचारण करना चाहिए ।

दशा :गुरु

आपका गुरु दाश 12-03-2032 को शुरु होता है ।

आपका जन्म नक्षत्र मघा है । इसलिए इस दाश में अक्सर आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा ।

जन्मकुण्डली के इस गृह स्थान के आधार पर गुरु दाश में प्रतिकूल स्थितियो से गुजरना पडेगा । गुरु समृद्वि को प्रधान करनेवाला गृह है फिर भी जब यह प्रतिकूल स्थिति में है तो आपको अप्रत्याशित मुसीबतों का सामना करना पडेगा । स्वास्थय विषय में आपके हमेशा आत्म संतुष्ट नहीं रहना चाहिए । अप्रधान व्याधि पर भी चिकित्स लेना चाहिए ।

गुरु दाश के हानिकारक प्रभावो की तीव्रता बुध के स्थान परिवर्तन पर बदलता रहता है । जब बुध प्रतिकूल स्थान पर है जो मुसीबतों का सामना करना पडेगो उसके बारे में यहाँ कहा गया है ।

जब गुरु कमज़ोर है आपका ईश्वर विश्वास भी कम हो जाएग । दूसरों का काम जानबुझकर या अनजाने में आपको दुख पहुँचाएगा । इस समय आपको अपने क्रोध और संतोष पर नियंत्रण रखना चाहिए ।

इस समय आप आशावादी बनना मुशीकल समझेगो । निराशा, चिन्ता और आत्मविश्वास की कमी सफलता के मार्ग में रुकावट बन जाएगा । दोस्तों और रिशतेदारों से बातचीत करते समय आपको स्वंय नियंत्रण करना चाहिए ।

इस समय आपको जीवन शक्ति की कमी मेहसूस होगा । आपका अतिव्यय वित्तसम्धी मूसिबतों को उत्पन्न करेगा । आपको कोमल व्यवहार को बनाए रखना चाहिए ।

जब गुरु प्रतिकूल स्थान पर है तो आपको अपने बोझ मे कमी होगा ।

अगर आप इस प्रकार के मुसीबतों का सामना कर रहे है तो यह समझना चाहिए कि गुरु प्रतिकूल स्थान पर उपस्थित है । जो लोग इस प्रकार के मुसिबतों को मेहसूस कर रहा है तो उन्हें गुरु को शान्त कराने केलिए कुछ मार्ग अपनाना चाहिए । सूर्य को शान्त रखने पर आपके ऊपर जो हानिकारक प्रभाव है, उसको कम कर सकते है । और जीवन सुख से बरा होगा ।

इस जन्मकुण्डली के विस्तृत निरीक्षण के आधार पर गुरु दाश में जो विशिष्ट आज्ञाओं का पालन करना चाहिए उसके बारे में यहाँ प्रस्तुत किया गया है ।

वस्त्र

गुरु गृह को शान्त कराने के लिए आपको पीले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए । हानिकारक प्रभावों को कम करने के लिए आपको गुरुवार में पीले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए ।

जीवन रीति

गुरु दाश में आपका जीवन शौली गुरु गृह के आवश्यकताओं को परिपूर्ण करना चाहिए । भगवान में विश्वास और अपने आशावाद स्वभाव को छोडना नहीं चाहिए । मानवीय मूल्यों को छोडना नहीं चाहिए । मानवीय मूल्यों को महत्व देना चाहिए । अपने होशियारी और दोस्तों के सहायता से सामुहिक सेवा का देखभाल करना चाहिए । अपने रिशतेदारो को प्यार करना चाहिए और उनके स्वास्थ्थ का ध्यान रखना चाहिए । अपने प्रतिज्ञ और वचन को निभाने के लिए हमेशा उत्सुक होना चाहिए । अपने वित्तसाम्बधी स्थिति पर व्यक्त कल्पना होना चाहिए । आध्यात्मिक ज्ञान को प्राप्त करना और दूसरों के साथ बाँट देना लाभदायक है । हमेश जीवन के अच्छे भागों को देखना चाहिए । गुरुवार को शारीरिक एंव मानसिक पवित्रता कायंम रखना चाहिए । अपने गुरु का आदर करना चाहिए और उनके बातों को मानना चाहिए ।

दान

अच्छे मन से भिक्षा या दान देना अपने पाप परिहार का ललित मार्ग है ।
गुरु को शान्त करने के लिए दाल, पीला माणिक्य, हलदी, जूट, नींबू, सोंना, नमक, शक्कर आदि को दान देना लाभदायक है ।

नाम : **Krishna** (पुरुष)
जन्म राशी : **सिंह**
जन्म नक्षत्र : **मघा**

गृहस्थिती : 25-जानुवरी- 2008
अयनांश : चित्रपक्ष

वेधफल इस समय के ग्रहों की स्थिति और जन्मपत्रिका में ग्रहों की स्थिति पर तुलना करके प्रक्षेपित किये गये हैं। ज्योतिष शास्त्र में सूर्य, बृहस्पति और शनि की गतियों की बड़ी प्रधानता होती है। हमारे जीवन में कभी इनका प्रभाव प्रतिकूल, कभी गुणदोष विहीन और कभी कभी अनुकूल भी होता है। यहाँ पर निकट भविष्य का फल बताया जाता है।

सूर्य का गोचर फल।

सूर्य एक राशि में एक महीने तक एक भाव का स्थान गृहण करता है।

∇ (14-जानुवरी-2008 >> 14-फेब्रुवरी-2008)

इस समय रवि छठ्ठा भाव का सक्रमण करेगा

आपका यह अच्छा समय है। विरोधियों पर विजय प्राप्त होगा। सुखमय जीवन रहेगा और सभी कार्यों में सफलता प्राप्त होगा। समस्या से मुक्त रहेंगे। शाँति प्रदान होगी। कार्यक्षेत्र में सफलता के साथ कीर्ति प्राप्त होगा। रोग-रिपुओं पर विजय प्राप्त होगा।

∇ (14-फेब्रुवरी-2008 >> 15-मार्च-2008)

इस समय रवि सातवँ भाव का सक्रमण करेगा

यात्राएँ और किसी तरह का अचानक परिवर्तन संभव है। आर्थिक कठिनाईयाँ होंगी। शारीरिक स्वास्थ्य पर ध्यान देना होगा। कुछ न कुछ स्वास्थ्य में गड़बड़ी होता रहेगा। आराम और मनोरंजन में समय लगाना अच्छा होगा। नये व्यवसाय की योजना कठिनता से सफल ही होगा।

∇ (15-मार्च-2008 >> 14-अप्रेल-2008)

इस समय रवि आठवाँ भाव का सक्रमण करेगा

इस समय आपके मन में कुछ पीड़ा होता रहेगा। सामने आये प्रश्नों का धैर्य के साथ सामना करने की तैयारी करना पड़ेगा। उदर रोग से मुक्त रहने का प्रयास कीजिए। गलत धारणाएँ आपके मन को अशान्त बनायेगा। अकारण क्रोधित होना पड़ेगा। यात्रा में अवरोध और परेशानियाँ आयेंगी।

गुरु का गोचर फल।

बृहस्पति एक राशि में करीब एक साल तक रहता है। यह एक प्रधान ग्रह है और बहुत से फल इसके आधार पर बताये जाते हैं।

∇ (22-नवेम्बर-2007 >> 09-डिसंम्बर-2008)

इस समय गुरु पंचम भाव का सक्रमण करेगा

बृहस्पति का श्रेष्ठ प्रभाव आप पर होने से आपका मान्यता बढ़ेगा और पदोन्नति भी प्राप्त होगा। निवास स्थान बच्चों के मधुर किल्लोल से गूँज उठेगा। धन और शान्ति दोनों प्राप्त होंगे। घर के निर्माण का या दूसरे देश में जाने का अच्छा समय है। मानसिक स्वस्थता प्राप्त होगा। सिफ़ारिशों के माध्यम से मुलाकात के लिए धैर्य के साथ चलें। सफलता प्राप्त होगा। नए कपड़े या आभूषण मिलना संभव हैं। लेखन और प्रकाशन संबन्धी काम सफल होंगे।

∇ (10-डिसंम्बर-2008 >> 01-मे-2009)

इस समय गुरु छठ्ठा भाव का सक्रमण करेगा

आपको सभी सुख सुविधाएँ प्राप्त होंगा फिर भी अस्वास्थ्य सताता रहेगा। बृहस्पति की प्रतिकूलता और कुछ समय तक रहेगी। पर उसकी अनुकूलता आपको जल्दी प्राप्त होनेवाला है। अकारण मन उद्वेग से भरा रहेगा। सत्कारों और मनोरंजन में आपको स्थान प्राप्त होगा। भोजन समारंभ में आमन्त्रित किए जायेंगे। मुख्य अतिथि विशेष का स्थान भी प्राप्त होगा।

शनि का गोचर फल।

शनिचर सामान्यतः दुःख देनेवाला ग्रह है और उसका प्रभाव दुःख उत्पन्न करता रहता है। पर कुछ स्थानों में वह खूब लाभदायक फल भी देता है। शनिचर एक राशि से दूसरी राशि में ढाई वर्ष में पहुँचता है।

∇ (17-जूलाई-2007 >> 09-सितंम्बर-2009)

इस समय शनि जन्म भाव का संक्रमण करेगा ।

आप साढ़े सात वर्ष शनिचर दशा के बीच हैं। यह सामान्यतः एक बुरा समय होता है। स्वजनों का विरोध, अनावश्यक भ्रमण, टूटफूट होना, आत्मधैर्य न होना आदि इस समय का फल होता है। शनिचर आपकी जन्मराशि में है। इसलिए अपमान परिस्थितियाँ एवं आर्थिक विषमताएँ होती रहेगी। इसका सामना करने के लिए सतर्क और दृढ़ रहना अत्यावश्यक है।

∇ (10-सितंम्बर-2009 >> 15-नवेम्बर-2011)

इस समय शनि दूसरा भाव का सक्रमण करेगा

शनि की साढ़े साती का अन्तिम चरण चल रहा है। सामान्य उद्वेग और उदासीनता आप के मन को घेरी रहती है। आपको शुभ समय की प्रतीक्षा रहती है। छोटी बातों को बढ़ाकर झगड़ा बनाने का मौका न दिया जाये। धन की रक्षा में ध्यान कीजिए।

उधोग या पेश के लिए अनुकूल समय

लग्न अधिपति, दसवी अधिपति, दसवी भाव और लग्न में उपस्थित शुभ गृह, लग्न और दसवी भाव में बृहस्पति का दृष्टि और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत दाश । अपहारा समय उधोग के लिए अनुकूल है ।

१५ उम्रे से लेकर ६० उम्र तक का विश्लेषण.

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
शुक्र	शनि	12-01-1984	13-03-1987	अनुकूल
शुक्र	बुध	13-03-1987	11-01-1990	अनुकूल
शुक्र	केतु	11-01-1990	13-03-1991	अनुकूल
रवि	चन्द्र	01-07-1991	30-12-1991	अनुकूल
रवि	गुरु	31-03-1993	17-01-1994	अनुकूल
रवि	शुक्र	12-03-1996	13-03-1997	अनुकूल
चन्द्र	मंगल	11-01-1998	12-08-1998	अनुकूल
चन्द्र	राहु	12-08-1998	11-02-2000	अनुकूल
चन्द्र	गुरु	11-02-2000	12-06-2001	उचित
चन्द्र	शनि	12-06-2001	11-01-2003	अनुकूल
चन्द्र	बुध	11-01-2003	12-06-2004	अनुकूल
चन्द्र	केतु	12-06-2004	11-01-2005	अनुकूल
चन्द्र	शुक्र	11-01-2005	12-09-2006	उचित
चन्द्र	रवि	12-09-2006	13-03-2007	अनुकूल
मंगल	गुरु	27-08-2008	03-08-2009	अनुकूल
मंगल	शुक्र	05-02-2012	06-04-2013	अनुकूल
मंगल	चन्द्र	12-08-2013	13-03-2014	अनुकूल
राहु	गुरु	23-11-2016	19-04-2019	अनुकूल
राहु	शुक्र	30-09-2025	29-09-2028	अनुकूल
राहु	चन्द्र	24-08-2029	23-02-2031	अनुकूल

विवाह के लिए अनुकूल समय

सातवी अधिपति, सातवी भाव में उपस्थित गृह जैसे शुक्र, राहु, चन्द्र , बृहस्पति का दृष्टि और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत दाश । अपहारा समय विवाह के लिए अनुकूल दिखाई पढ़ता है ।

१८ उम्रे से लेकर ५० उम्र तक का विश्लेषण.

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
शुक्र	बुध	13-03-1987	11-01-1990	अनुकूल
शुक्र	केतु	11-01-1990	13-03-1991	अनुकूल
रवि	चन्द्र	01-07-1991	30-12-1991	उचित
रवि	मंगल	30-12-1991	06-05-1992	उचित

रवि	राहु	06-05-1992	31-03-1993	उचित
रवि	गुरु	31-03-1993	17-01-1994	उचित
रवि	शनि	17-01-1994	30-12-1994	उचित
रवि	बुध	30-12-1994	06-11-1995	अनुकूल
रवि	केतु	06-11-1995	12-03-1996	अनुकूल
रवि	शुक्र	12-03-1996	13-03-1997	उचित
चन्द्र	मंगल	11-01-1998	12-08-1998	उचित
चन्द्र	राहु	12-08-1998	11-02-2000	उचित
चन्द्र	गुरु	11-02-2000	12-06-2001	उचित
चन्द्र	शनि	12-06-2001	11-01-2003	उचित
चन्द्र	बुध	11-01-2003	12-06-2004	अनुकूल
चन्द्र	केतु	12-06-2004	11-01-2005	अनुकूल
चन्द्र	शुक्र	11-01-2005	12-09-2006	उचित
चन्द्र	रवि	12-09-2006	13-03-2007	उचित
मंगल	राहु	09-08-2007	27-08-2008	उचित
मंगल	गुरु	27-08-2008	03-08-2009	उचित
मंगल	शनि	03-08-2009	12-09-2010	उचित
मंगल	बुध	12-09-2010	09-09-2011	अनुकूल
मंगल	केतु	09-09-2011	05-02-2012	अनुकूल
मंगल	शुक्र	05-02-2012	06-04-2013	उचित
मंगल	रवि	06-04-2013	12-08-2013	उचित
मंगल	चन्द्र	12-08-2013	13-03-2014	उचित
राहु	गुरु	23-11-2016	19-04-2019	उचित
राहु	शनि	19-04-2019	23-02-2022	उचित

व्यापार के लिए अनुकूल समय

दूसरा, नौवाँ, दसवी और ग्यारहवी अधिपति, लग्न और ग्यारहवी भाव में बृहस्पति, लग्न और ग्यारहवी भाव में बृहस्पति का दृष्टि , और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत दाश । अपहारा समय व्यापार के लिए अनुकूल दिखाई पड़ता है ।

१५ उम्रे से लेकर ६० उम्र तक का विश्लेषण.

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
शुक्र	शनि	12-01-1984	13-03-1987	अनुकूल
शुक्र	बुध	13-03-1987	11-01-1990	उचित
शुक्र	केतु	11-01-1990	13-03-1991	अनुकूल
रवि	चन्द्र	01-07-1991	30-12-1991	उचित
रवि	मंगल	30-12-1991	06-05-1992	उचित
रवि	राहु	06-05-1992	31-03-1993	अनुकूल
रवि	गुरु	31-03-1993	17-01-1994	उचित
रवि	शनि	17-01-1994	30-12-1994	अनुकूल
रवि	बुध	30-12-1994	06-11-1995	उचित
रवि	केतु	06-11-1995	12-03-1996	अनुकूल

रवि	शुक्र	12-03-1996	13-03-1997	उचित
चन्द्र	मंगल	11-01-1998	12-08-1998	उचित
चन्द्र	राहु	12-08-1998	11-02-2000	अनुकूल
चन्द्र	गुरु	11-02-2000	12-06-2001	उचित
चन्द्र	शनि	12-06-2001	11-01-2003	अनुकूल
चन्द्र	बुध	11-01-2003	12-06-2004	उचित
चन्द्र	केतु	12-06-2004	11-01-2005	अनुकूल
चन्द्र	शुक्र	11-01-2005	12-09-2006	उचित
चन्द्र	रवि	12-09-2006	13-03-2007	उचित
मंगल	राहु	09-08-2007	27-08-2008	अनुकूल
मंगल	गुरु	27-08-2008	03-08-2009	उचित
मंगल	शनि	03-08-2009	12-09-2010	अनुकूल
मंगल	बुध	12-09-2010	09-09-2011	उचित
मंगल	केतु	09-09-2011	05-02-2012	अनुकूल
मंगल	शुक्र	05-02-2012	06-04-2013	उचित
मंगल	रवि	06-04-2013	12-08-2013	उचित
मंगल	चन्द्र	12-08-2013	13-03-2014	उचित
राहु	गुरु	23-11-2016	19-04-2019	अनुकूल
राहु	बुध	23-02-2022	11-09-2024	अनुकूल
राहु	शुक्र	30-09-2025	29-09-2028	अनुकूल
राहु	रवि	29-09-2028	24-08-2029	अनुकूल
राहु	चन्द्र	24-08-2029	23-02-2031	अनुकूल

गृह निर्माण के लिए अनुकूल समय

चौथा अधिपति, शुभ गृह जिसका दृष्टि चौथा भाव और चौथा अधिपति पर है, और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत दाश । अपहारा समय गृह निर्माण के लिए अनुकूल दिखाई पजता है ।

१५ उम्रे से लेकर ८० उम्र तक का विश्लेषण.

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
शुक्र	शनि	12-01-1984	13-03-1987	अनुकूल
रवि	गुरु	31-03-1993	17-01-1994	अनुकूल
रवि	शनि	17-01-1994	30-12-1994	अनुकूल
चन्द्र	गुरु	11-02-2000	12-06-2001	अनुकूल
चन्द्र	शनि	12-06-2001	11-01-2003	अनुकूल
मंगल	गुरु	27-08-2008	03-08-2009	अनुकूल
मंगल	शनि	03-08-2009	12-09-2010	अनुकूल
राहु	गुरु	23-11-2016	19-04-2019	अनुकूल
राहु	शनि	19-04-2019	23-02-2022	अनुकूल
गुरु	शनि	01-05-2034	11-11-2036	उचित
गुरु	बुध	11-11-2036	17-02-2039	अनुकूल
गुरु	केतु	17-02-2039	24-01-2040	अनुकूल

गुरु	शुक्र	24-01-2040	24-09-2042	अनुकूल
गुरु	रवि	24-09-2042	13-07-2043	अनुकूल
गुरु	चन्द्र	13-07-2043	11-11-2044	अनुकूल
गुरु	मंगल	11-11-2044	18-10-2045	अनुकूल
गुरु	राहु	18-10-2045	12-03-2048	अनुकूल

अष्टकवर्गा

अष्टकवर्गा पध्दति भारतीय ज्योतिष का भविष्यवाणि रीति है जो गृहों की अवस्थिति से सम्बधित अंको के प्रयोग का उपयोग करता है । अष्टकवर्गा का अर्थ है अष्टगुण श्रेणीकरण । यह राहु और केतु का अवरोद करके, लग्न को मिलाकर गृहों को अष्टगुण के बारे में वर्णित करता है । गृहों की शक्ति को मापने के लिए कुछ स्थिर नियमों का पालन किया गय है । एक गृह की शक्ति और उसके प्रभाव की तीव्रता, उससे सम्बधित अन्य गृहों और लग्न की स्थिति पर आधारित है । हर गृह के लिए आठ पूर्ण अंग दिया जाता है । गृहों का ०-८ अंग के आधार पर बदलता हुआ शक्ति होगा ।

	चन्द्र	सूर्य	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	सभी मिलाकार
मेष	2	3*	2*	2	2	5	3*	19
वृष	2	4	6	3*	1*	4	1	21
मिथुन	5	4	4	6	4	6	2	31
कर्क	5	3	3	5	3	4	3	26
सिंह	6*	4	6	6	5	5	3	35
कन्या	5	2	5	4	3	4	4	27
तुला	5	4	2	3	4	4*	5	27
वृशचिक	3	4	4	4	2	4	2	23
धनु	1	5	5	5	4	5	2	27
मकर	6	6	6	4	3	5	4	34
कुंम्भ	6	5	4	6	4	6	5	36
मीन	3	4	7	4	4	4	5	31
	49	48	54	52	39	56	39	337

* गृहों का स्थान.
लग्न तुला में है ।

चन्द्र का अष्टकवर्गा

चन्द्र के अष्टकवर्गा में छः बिन्धु है जो आपको व्यक्त और संतुलित मन के अमूल्य वरदान से अनुग्रहित होगा । आपके मन की स्थिरता और शुद्व विचार उच्च आदर्श से शिक्षित करेगा । लोग आपके उपदेश और बुद्वि प्राप्त करने के लिए समीप आएगो और आपके निर्देशों से लाभ पाएगों ।

सूर्य का अष्टकवर्गा

आपके जन्मकुण्डली के सूर्य अष्टकवर्ग में उपस्थित तीन बिन्धुओं का प्रभाव को टाल नहीं सकते । निरंतर यात्रा और शरीरिक प्रयासों से प्रभावित होकर आपका शरीर तक जाएगा । फिर भी आपका मानसिक नियंत्रण आपके हाथो में होगा । संघर्षों से मानसिक खिंचाव को दूर रखने के लिए ध्यान रखे । जीवन के कष्ट समय पर पेढ़ लिखे लोगें का उपदेश लेना उचित होगा ।

बुध गृह का अष्टकवर्गा

जन्मकुण्डली के बुध अष्टकवर्गा में उपस्थित दो बिन्धु परिवार के सदस्यों के बीच गलतफहवी उत्पन्न करेगा । क्रोध या आपस में बातचीत की कमी इसका कारण होगा । इसलिए आपस में समझौते और विश्वास के साथ जीने से रिशतों को कायम रख सकते है .

शुक्र का अष्टकवर्गा

जाने और अनजाने में अपने अधिकारियों के साथ समझदारी की कमी आपको आश्चर्य करेगा । यह आपके जन्मकुण्डली के शुक्र अष्टकवर्गा में उपस्थित तीन बिन्धुओं के कारण होगा । अपने वाक्य और कर्म पर नियंत्रण रखने से बुरे भाग्य को दूर कर सकते है ।

मंगल गृह का आष्टगवर्ग

मंगल के अष्टकवर्गा में उपस्थिति एक बिन्धु शरीरिक दुर्बलता को सूचित करता है सूचित करता है । आपका शरीर आपके द्वारा प्रधान करना वाले ध्यान को प्रतिबिमबित करता है और गृहों के चेतावनी पर ध्यान में रखकर पूर्वचिन्ता करना ही समझदरि होगा । एक छोडे बुखार को भी मतिहीन नहीं समझना चाहिए ।

गुरु का अष्टकवर्गा

किसी कारण से आपके जीवन का हर नीचाई एक उचाई से बराबर हो जाएगा । आपके जन्मकुण्डली में उपस्थित गुरु अष्टकवर्ग के चार बिन्धुओं से प्रभावित होगा । यह एक वरदान है क्योंकि जीवन के परिस्थितियों में होने वाला धटाव-बढ़ाव में मानासिक शान्ति को उत्पन्न करेगा ।

शनि गृह का अष्ठवर्ग

रिशतेदारो से मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा । शनि के अष्टकवर्गा में तीन बिन्धु है जो पारिवारिक विस्वरता, अस्वस्थता और सन्तानों के पीडा का अनुभव आदि को सुचित करता है । आपको वित्तसम्बधी चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा । खर्च को कम करने से धन सम्बघी मुसीबतों को कम कर सकते है ।

सर्वआष्ठगवर्गा भविष्यवाणी

छठा भाव तीस से ज्यादा बिन्धुओं से सम्बधित है और शनि की दृष्टि में है और छठा अधिपति एक वृतपाद में है । आपको कोई वस्तु या जायदाद की कमी नहीं होगा ।

आपके जन्मकुण्डली में सबसे अधिक बिन्धु वृशचिक राशी से कुंभ राशी तक है । प्रांरभिक जीवन में जो कुछ हुआ हो उसको ध्यान में रखे बिना बुढ़ापे में आपको अनेक पुरस्कार हासिल होगा गृहों का षडयन्त्र आपको आर्थिक और स्वास्थ्य खिचाव से मोचित करता है और सेवा निवृत्ति के बाद शन्तिपूर्ण जीवन प्रदान करेगा ।

गुरु शुक्र,बुध द्वारा धारण किए राशीी में उपस्थित आकार से सदृश के अनुसार आपका भाग्य बहुत अच्छा होगा । आपका शैक्षिक अभिलाषा आनन्दमय होगा और आपको ऊँचेपढ़ाई के लिए स्थान प्राप्त होगा । आपको उधोग के क्षेत्र में धन, सम्पत्ति से प्रसिद्वि की ओर ले जाएगा । व्यक्तिगत जीवन में आपको आदर्श युक्त जीवन साथी प्राप्त होगा और वैवाहिक जीवन आनन्दमय होगा । आपके सन्तानों के साथ जीवन अनुग्रहित होगा । यह आपके जीवन का सबसे अनुग्रहित समय होगा ।

आपके लिए यह विशिष्ट समय २७ , २१ और १९ उम्र में होगा ।

With best wishes :
Astro-Vision Futuretech Pvt.Ltd.
36/674, Elamkulam Road, Kaloor, Cohin - 682017

Note:

This report is based on the data provided by you and the best possible research support we have received so far. We do not assume any responsibility for the accuracy or the effect of any decision that may be taken on the basis of this report.